विशद

क्षेत्रपाल विधान

(आचार्य श्री विश्वनन्दी कृत क्षेत्रपाल विधान का अनुवाद रूप)

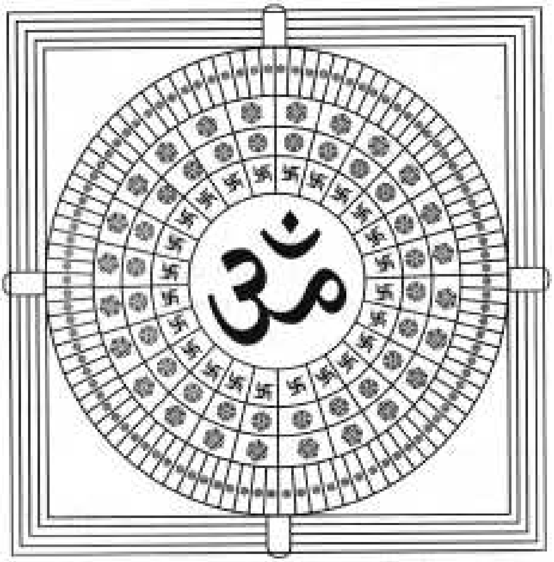

वलय-1 : चौबीस तीर्थंकर पूजा के लिए। वलय-2 : चौबीस यक्ष देवता पूजा के लिए।
वलय-3 : चौबीस यक्षी देवी पूजा के लिए। वलय- 4 : 96 क्षेत्रपाल पूजा के लिए।
इस विधान में 24 पूर्णार्घ सहित कुल 192 अर्घ्य होते हैं।

मंगल आशीर्वाद

प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज

प्रकाशक :

विशद साहित्य केन्द्र

कृति : **विशद क्षेत्रपाल विधान**
मंगल आशीर्वाद : **प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज**
अनुवादकः पं. धनुषकर जैन, जयपुर
संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागर जी महाराज,
क्षु. विसोमसागर जी महाराज, ब्र. प्रदीप भैया
सहयोगी : आर्यिका भक्तिभारती माताजी, क्षु. वात्सल्य भारती माताजी
संपादन : ब्र. ज्योति दीदी (9829076085),
ब्र.सपना दीदी (9829127533)
ब्र. आस्था दीदी (9660996425)
संयोजन : ब्र. सोनू दीदी, ब्र. आरती दीदी
संस्करण : प्रथम 2016 (1000 प्रतियाँ)
मूल्य : 20/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
सम्पर्क सूत्र : (1) **विशद साहित्य केन्द्र**
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर कुआँ वाल जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा), मो. 9812502062
(2) **हरीश जैन**
जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561 नेहरु पाली
नियर लाल बत्ती चौक, गांधी नगर, दिल्ली
मो. 098181157971, 09136248971
(3) **श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर**
नेमिनगर, बस स्टैण्ड के पास, नैनवा,
जिला-बूँदी (राज.) 9829333557
(4) **सुरेश जैन**
पी-958, गली नं. 3, शान्ति नगर, दुर्गापुरा, जयपुर
मो. 9413336017

-: पुण्यार्जक :-
पं. मनोज जैन शास्त्री, टोंक (राज.)

प्रकाशक : **विशद साहित्य केन्द्र** e-mail : vishadsagar11@gmail.com
मुद्रक : **पिक्सल 2 प्रिंट, जयपुर** (हेमन्त जैन मो. 9509529502)

श्री क्षेत्रपाल विधान परिचय

इस आगमोक्त क्षेत्रपाल विधान की रचना प्राचीन दिगम्बर आचार्य श्री विश्वनंदीजी के संस्कृत क्षेत्रपाल विधान के आधार से की गई है। अर्थात् यह विधान जिनागम के अनुसार पूर्वाचार्यों के द्वारा प्रामाणिक है।

इस विधान में प्रत्येक तीर्थंकर, उनके यक्ष-यक्षिणी एवं 4-4 क्षेत्रपाल एवं 1 पूर्णार्घ, इस प्रकार से एक तीर्थंकर संबंधी पूजन में 8 अर्घ होते हैं। इस प्रकार से (24X8=192) इस विधान में कुल 192 अर्घ हैं। अतः पूजक को एक दिन में जितने तीर्थंकर संबंधी पूजन करना है वह उतने अर्घ आदि सामग्री लावें।

जैसे- एक तीर्थंकर संबंधी पूजन में 8 अर्घ लायें। दो तीर्थंकर संबंधी पूजन में 16 अर्घ लायें इत्यादि।

जितने अर्घ हैं उतने ही ध्वजा, पुष्प, नैवेद्य आदि सामग्री लायें एवं उसमें भी नित्यमह पूजा, समुच्चय क्षेत्रपाल पूजा एवं यक्ष-यक्षिणी पूजा हेतु अर्घ आदि सामग्री शक्ति-इच्छानुसार अलग से भी ला सकते हैं।

एक तीर्थंकर संबंधी पूजन हेतु सामग्री (कम से कम)

पुष्प	- 8
नैवेद्य	- 8
श्रीफल	- 8
जनेऊ	- 5
लाल ध्वजा	- 8
देवी के वस्त्राभूषण आदि	- 1 जोड़ी
देव एवं क्षेत्रपाल के वस्त्र आभूषण आदि	- 5 जोड़ी या दो जोड़ी
तेल	- 50 मिली.ली.
तिल, चना, गुड़, उड़द, सिंदूर आदि	- 50-50 ग्राम
दक्षिणा (सिक्का)	- 8 सिक्का

क्षेत्रपाल विधान को जो विधिपूर्वक करता है उनके सारे कार्य सिद्ध होते हैं। रक्षकदेव सबकी रक्षा करने वाले होते हैं, हम विश्वास के साथ लगन पूर्वक पूजा करेंगे तो उसका फल कोई छीन नहीं सकता, हमें ही प्राप्त होगा। क्षेत्रपाल विधान में तीर्थंकरों की आराधना की गई साथ ही क्षेत्रपाल बाबा को पूजा समर्पित की गई है। हमें सच्चे मन से भगवान की भक्ति करना चाहिए।

- सपना दीदी (संघस्थ आ. विशद सागरजी महाराज)

लघु सकलीकरण विधि

अंगन्यास मंत्र -

1. ॐ ह्रां क्षां नमो भैरवाय! मम अभिमुखांगं रक्ष-रक्ष स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं क्षीं नमो भैरवाय! मम हृदयं रक्ष-रक्ष स्वाहा।
3. ॐ हूं क्षूं नमो भैरवाय! मन नाभिं रक्ष-रक्ष स्वाहा।
4. ॐ ह्रौं क्षौं नमो भैरवाय! मम जानुं रक्ष-रक्ष स्वाहा।
5. ॐ ह्रः क्षः नमो भैरवाय! मम पादं रक्ष-रक्ष स्वाहा।

अथ नमस्कार मंत्र -

1. ॐ रुद्राय नमः।
2. ॐ रुद्ररूपाय नमः।
3. ॐ बहुरूपाय नमः।
4. ॐ यक्षरूपाय नमः।
5. ॐ यक्षाय नमः।
6. ॐ त्र्यंबकाय नमः।
7. ॐ गदानुवास धनुर्धराय नमो नमः।

(पुष्पाक्षत, तांबूल स्वर्ण, वस्त्राभूषण, यज्ञभाग सामग्री समर्पण करके ही नमस्कार करना चाहिए।)

अथ दिग्बंधन मंत्र -

ॐ ह्रीं नमो भैरवाय चउदिशां बन्ध स्वाहा।
ॐ ह्रीं नमो भैरवाय विदिशां बन्ध-बन्ध स्वाहा।
ॐ ह्रीं नमो भैरवाय आकाशं बन्ध-बन्ध स्वाहा।
ॐ ह्रीं नमो भैरवाय पातालं बन्ध-बन्ध स्वाहा।
ॐ ह्रीं नमो भैरवाय मंडलं बन्ध-बन्ध स्वाहा।
ॐ ह्रीं नमो भैरवाय सर्वविध रक्षां बन्ध-बन्ध स्वाहा।
ॐ रुद्राय नमो, रुद्ररूपाय नमो, सत्पुरुषाय नमो, यक्षाय नमो, त्र्यंबकाय नमो, गदाधराय नमो नमः।

जाप मंत्र

ॐ खं क्षेत्रपालाय नमः।
ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षा क्षेत्रपालाय नमः।
ॐ ऐं क्लीं क्लीं ह्रीं ह्रीं सं वं वः आप दुद्धारणाय असमय बद्धाय लोकेश्वराय सर्वाकर्षण भैरवाय दारिद्रयविद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः।

लघु विनय पाठ

दोहा

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव जी, कर्म नशाये आठ।।
शिव वनिता के ईश तुम, अनन्त चतुष्टय वान।
मुक्ति वधु के कन्त हो, देते शिव सोपान।।
पीड़ा हारी लोक में, भवदधि नाशन हार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार।।
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत सत्येन्द्र।।
भविजन को भव सिन्धु में, एक आप आधार।
कर्मबन्ध का जीव के, करने वाले क्षार।।
चरण कमल तल पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भविजीवों को मोक्ष पद, करते आप प्रकाश।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाये राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को 'विशद' विराग।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो! आया तुमरे द्वार।।

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्य उपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अन्त।।
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।

अथ अर्हत पूजा प्रतिज्ञायां.... ।। पुष्पाजलिं क्षिपामि।

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्यो नमः। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चत्तारि मंगलं, अरहिन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो, धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा।
साहू लोगुत्तमा, केवली पण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमा।
चत्तारि शरणं पववज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि। साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जमि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शकिनी, बाधा ना रह पाए।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्पचरु, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन सहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपमीीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री द्वादशांग वाणी प्रथमानुयोग, करुणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी, करता हूँ प्रभु का गुणगान।।
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!
हे अर्हन्त! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञाये जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

स्वस्ति मंगल पाठ

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पदम सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरहमल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधान पुष्पांजलिं क्षिपामि।

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद है आठ ऋद्धि के, चौसठ उत्तर भेद महान।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, विशद करें स्व पर कल्याण।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नो भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाएँ मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।

।। इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं।। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजा (लघु)

स्थापना

देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभू निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, प्रभु मोह तिमिर विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाश दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाल

दोहा- **देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।**
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल।।

(तामरस छंद)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते।।
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्व साधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते।।
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पंचकल्याण नमस्ते।।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शाश्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते।।

दोहा- **अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।**
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।**
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पाते शिव का योग।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री घंटाकर्ण महावीर यक्ष पूजन

दोहा- **विघ्न हरण मंगल करण, घंटाकर्ण महावीर।**
जिनकी अर्चा से विशद, मिलता भव का तीर।।

स्थापना

तीर्थंकर श्री महावीर अरु, घंटाकर्ण यक्ष महाराज।
आह्वानन करते निज उर में, भाव सहित पूजा को आज।।
जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, यक्षराज है शक्तीवान।
सुख शांती सौभाग्य जगाने, जिनका हम करते आह्वान।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सर्वलक्षण स्वायुधवाहन वधू चिह्न सपरिवार हे घंटाकर्ण महावीर यक्ष! अत्र आगच्छ-आगच्छ इति आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(ज्ञानोदय छन्द)

भव वन में भटक रहे अब तक, भर सकी ना तृष्णा की खाई।
भव सिन्धु रहा गहरा अतिशय, सुख की इक बूँद ना मिल पाई।।
है घण्टाकर्ण श्री महावीर, जिनशासनके रक्षाकारी।
हे विघ्न विनाशक रक्षाकार, तुम दूर करो बाधाएँ सारी।।1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण महावीर यक्षाय जलं समर्पयामीति स्वाहा।

भव का अभाव अब हो मेरा, यह भाव बनाकर आए हैं।
चन्दन सम शीतलता पाने, यह शीतल चन्दन लाए हैं।।
है घण्टाकर्ण श्री महावीर, जिनशासनके रक्षाकारी।
हे विघ्न विनाशक रक्षाकार, तुम दूर करो बाधाएँ सारी।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण महावीर यक्षाय चंदनं समर्पयामीति स्वाहा।

तुमने जिनेन्द्र अर्चा करके, यह जीवन सफल बनाया है।
मम् शाश्वत अक्षय पद पाने, का भाव हृदय में आया है।।
है घण्टाकर्ण श्री महावीर, जिनशासनके रक्षाकारी।
हे विघ्न विनाशक रक्षाकार, तुम दूर करो बाधाएँ सारी।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण महावीर यक्षाय अक्षतं समर्पयामीति स्वाहा।

यह पुष्प लिए दश धर्मों के, जिससे यह जीवन महकाए।
श्रद्धा से आज चढ़ाने को, हे देव! शरण में हम आए।।
है घण्टाकर्ण श्री महावीर, जिनशासनके रक्षाकारी।
हे विघ्न विनाशक रक्षाकार, तुम दूर करो बाधाएँ सारी।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण महावीर यक्षाय पुष्पं समर्पयामीति स्वाहा।

जय पाकर चपल इन्द्रियों पर, अब निज का ध्यान लगाइये।
चेतन की अलौकिक शक्ति भी, निज के अन्दर भी प्रगटाएँगे।
है घण्टाकर्ण श्री महावीर, जिनशासनके रक्षाकारी।
हे विघ्न विनाशक रक्षाकार, तुम दूर करो बाधाएँ सारी।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण महावीर यक्षाय नैवेद्यं समर्पयामीति स्वाहा।

जग तमहारी जड़ रत्नों के, हम अनुपम दीपक लाते हैं।
ये रत्नमयी दीपक लेकर, निज आतम दीप जलाते हैं।।
है घण्टाकर्ण श्री महावीर, जिनशासनके रक्षाकारी।
हे विघ्न विनाशक रक्षाकार, तुम दूर करो बाधाएँ सारी।।6।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण महावीर यक्षाय दीपं समर्पयामीति स्वाहा।

जो तप के दावानल द्वारा, कर्मों की धूप जलाते हैं।
वे शिवपथ के राही बनते, अरु सिद्ध शिला पर जाते हैं।।
है घण्टाकर्ण श्री महावीर, जिनशासनके रक्षाकारी।
हे विघ्न विनाशक रक्षाकार, तुम दूर करो बाधाएँ सारी।।7।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण महावीर यक्षाय धूपं समर्पयामीति स्वाहा।

हे महा मनस्वी तेजस्वी, तुम अवधिज्ञान शुभ प्रगटाए।
हम भौतिक चाह विसर्जित कर, फल शिवपथ का पाने आए।।
है घण्टाकर्ण श्री महावीर, जिनशासनके रक्षाकारी।
हे विघ्न विनाशक रक्षाकार, तुम दूर करो बाधाएँ सारी।।8।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण महावीर यक्षाय फलं समर्पयामीति स्वाहा।

उपसर्ग जयी करुणा मूर्ती, है अविचल शांती के धारी।
हम पद अनर्घ्य पाने अतिशय, यह अर्घ्य चढ़ाते शुभकारी।।
है घण्टाकर्ण श्री महावीर, जिनशासनके रक्षाकारी।
हे विघ्न विनाशक रक्षाकार, तुम दूर करो बाधाएँ सारी।।9।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण महावीर यक्षाय अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा– **भव दुख शांती हेतु हम, देते शांतीधार।**
राह दिखओं मोक्ष की, करो एक उपकार।।

शान्तये शांतिधारा।

समता मय जीवन बने, जागे ह्रदय विवेक।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, लेकर पुष्प अनेक।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

घंटाकर्ण स्तोत्र

ॐ घंटाकर्ण महावीर सर्व व्याधि विनाशकः।
विस्फोटकं भयं प्राप्तेः रक्ष रक्ष महाबलः।।1।।
यत्र त्वं तिष्ठसे देव, लिखितोक्षर पंक्ति भिः।
रोगास्तत्र प्रणश्यंति, वात पित्त कफोद्भवाः।।2।।
तत्र राज भयं नास्ति, यांति कर्णे जपात् क्षयं।
शाकिनी भूत वेताला, राक्षसाः प्रभवंति न।।3।।
नाकाले मरणं तस्य, न च सर्पेण दृस्यते।
अग्नि चोर भयं नास्ति, ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं घंटाकर्ण नमोस्तुते।।4।।

ॐ ह्रीं ठः ठः स्वाहा। इति गौतमौक्त विद्यास्तवनम्।

घंटाकरण जाप्य मंत्र

(1) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐ महावीर घंटाकर्ण सर्व व्याधि विनाशक विस्फोटक वात पित्तोद्भव कफ रोग चोर लूतादि वृण दोष मपहर ह्रीं घंटाकर्ण यक्ष नमोस्तुते ठः ठः स्वाहा।

(2) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं घंटाकर्ण महावीराय नमोस्तुते मम सर्वकार्य सिद्धिं कुरु सर्व रोगोपद्रव शांतिं कुरु कुरु ठः ठः ठः स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **जिनका यश फैला विशद, ऊर्ध्व अधो पाताल।**
घण्टा कर्ण महावीर की, गाते हैं जयमाल।।

(वेसरी छन्द)

महावीर के यक्ष निराले, सबके संकट हरने वाले।
घंटाकर्ण यक्ष को ध्याएँ, विघ्न दूर सारे हो जाएँ।।टेक।।

गुण के सागर जो कहलाए, विघ्न विनाशक जग में गाए।। घंटा...।।
जो हैं रिद्धि सिद्धि के दाता, देव शास्त्र गुरु से है नाता।। घंटा...।।
भक्ती पापों की क्षयकारी, शांती कारक मंगलकारी।। घंटा...।।
चोर अग्नि का भय नश जाए, व्याधी ना जीवन में आए।। घंटा...।।
शत्रू का भय ना रह पाए, बन्धन कोई हो खुल जाए।। घंटा...।।
आधि व्याधि के रोग विनाशी, सर्व अमंगल के हो नाशी।। घंटा...।।
सम्पत्ती की बढ़ती होवे, दारिद्र पूर्ण रूप से खोवे।। घंटा...।।
स्वजनों का संयोग बनावे, पुत्रादिक संतति को पावे।। घंटा...।।
प्राणी होवे यश का धारी, सर्व जगत होवे उपकारी।। घंटा...।।
महावीर के जो गुण गावे, साथ यक्ष को भी जो ध्यावे।। घंटा...।।
जीवन में नर शांती पावे, अपना वह सौभाग्य जगावे।। घंटा...।।

दोहा- **घंटा कर्ण महावीर का, करें जीव जो ध्यान।**
सुख शांती सौभाग्य पा, पावें पद निर्वाण।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सर्वलक्षण संपूर्ण स्वायुधवाहन-सचिन्ह सपरिवार घंटाकर्ण महावीर यक्षाय जयमाला पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **महावीर के साथ में , करें यक्ष का ध्यान।**
सर्व सिद्धियाँ प्राप्त हों, बढ़े जगत में शान।।

इत्याशीर्वादः। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री नवदेवता की आरती

तर्ज – इह विधि मंगल आरति कीजे........

नव देवो की आरति कीजे, नर भव स्वयं सफल कर लीजे।
पहली आरती अर्हत् थारी, कर्म घातिया नाशनकारी।। नव देवों..
दूसरी आरती सिद्ध अनंता, कर्मनाश होवें भगवंता।। नव देवों..
तीसरी आरती आचार्यों की, रत्नत्रय के सद् कार्यों की।। नव देवों.
चौथी आरती उपाध्याय की, वीतरागरत स्वाध्याय की।। नव देवों..
पॉचवी आरती मुनि संघ की, बाह्य अभ्यंतर रहित संग की।। नव देवों.
छठवी आरती जैन धर्म की, 'विशद' अहिंसा मई परम की।। नव देवों.
सातवीं आरती जैनागम की, नाशक महामोह के तम की।। नव देवों..
आठवी आरती चैत्य तिहारी, भवि जीवों को मंगलकारी।। नव देवों..
नौवीं आरती चैत्यालय की, दर्शन करते मिथ्याक्षय की।। नव देवों..
आरती करके वन्दन कीजे, शीश झुकाकर आशिष लीजे।। नव देवों..

चतुर्विंशति तीर्थंकर यक्ष यक्षिणी पूजा

स्थापना

वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर के सब क्षेत्रपाल गुणवान।
चार-चार प्रति तीर्थंकर के, रहे छियानवे श्रद्धावान।।
है विधान यह क्षेत्रपाल शुभ, अतः आपका है आह्वान।
आओ पधारो आप यहाँ पर, भेंट ग्रहण ये करो प्रधान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशतिजिन संबंधी सर्व यक्ष-यक्षिणी समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

यह कूप से जल भर लाए, हम भेंट हेतु शुभ आए।
तुम क्षेत्र के रक्षाकारी, हे क्षेत्रपाल! मनहारी।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरजिन संबंधी यक्ष-यक्षिभ्यो जलं समर्पयामीति स्वाहा।

चन्दन केसर में गारा, जिसपे अधिकार तुम्हारा।
तुम क्षेत्र के रक्षा कारी, हे क्षेत्रपाल! मनहारी।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरजिन संबंधी यक्ष-यक्षिभ्यो चन्दनं समर्पयामीति स्वाहा।

अक्षत ये धवल धुवाएँ, अक्षय शांती को आएँ ।
तुम क्षेत्र के रक्षा कारी, हे क्षेत्रपाल! मनहारी।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरजिन संबंधी यक्ष-यक्षिभ्यो अक्षतान् समर्पयामीति स्वाहा।

हम महिमा सुनकर आए, ये पुष्प भेंटने लाए।
तुम क्षेत्र के रक्षा कारी, हे क्षेत्रपाल! मनहारी।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरजिन संबंधी यक्ष-यक्षिभ्यो पुष्पं समर्पयामीति स्वाहा।

घृत के नैवेद्य बनाए, ये थाल में भरके लाए ।
तुम क्षेत्र के रक्षा कारी, हे क्षेत्रपाल! मनहारी।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरजिन संबंधी यक्ष-यक्षिभ्यो नैवेद्यं समर्पयामीति स्वाहा।

जगमग ये दीप जलाए, हम मोह नशाने आए।
तुम क्षेत्र के रक्षा कारी, हे क्षेत्रपाल! मनहारी।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरजिन संबंधी यक्ष-यक्षिभ्यो दीपं समर्पयामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, दुष्कर्म से मुक्ती पाए ।
तुम क्षेत्र के रक्षा कारी, हे क्षेत्रपाल! मनहारी।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरजिन संबंधी यक्ष–यक्षिभ्यो धूपं समर्पयामीति स्वाहा।

फल ताजे तुम पद धारें, हे क्षेत्रपाल स्वीकारें ।
तुम क्षेत्र के रक्षा कारी, हे क्षेत्रपाल! मनहारी।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरजिन संबंधी यक्ष–यक्षिभ्यो फलं समर्पयामीति स्वाहा।

ये अर्घ्य आप स्वीकारो, मम सारे विघ्न निवारो।
तुम क्षेत्र के रक्षा कारी, हे क्षेत्रपाल! मनहारी।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरजिन संबंधी यक्ष–यक्षिभ्यो अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

।।शृंगार।।

वस्त्र में झरी लगी स्वर्णाभ, चढ़ाकर पाएँ हम शुभ लाभ।
करें हम क्षेत्रपाल शृंगार, शीघ्र हो विघ्नों का संहार।।
जनेऊ रजतमयी शुभकार, चढ़ाकर होवे मंगलकार।
करें हम क्षेत्रपाल शृंगार, शीघ्र हो विघ्नों का संहार।।
अँगूठी कण्ठी बाजूबन्द, चढ़ाके पाएँ भक्त आनन्द।
करें हम क्षेत्रपाल शृंगार, शीघ्र हो विघ्नों का संहार।।
चढ़ाएँ चमचम रत्न किरीट, बनो हे देव! हमारे मीत।
करें हम क्षेत्रपाल शृंगार, शीघ्र हो विघ्नों का संहार।।
तेल तिल चना व गुड़ सिन्दूर, ध्वजा ले मिसरी उड़त मसूर।
चढ़ाते करने दुख परिहार, करें हम क्षेत्रपाल शृंगार।।

दोहा– **देते शांतीधार हम, क्षेत्रपाल के अग्र।**
पुष्पांजलि करते विशद, जीवन होय समग्र।।

।। शान्तये शांतीधारा। पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

जाप्य मंत्र : ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनसंबंधी यक्ष–यक्षिणीभ्यो नमः (9,27,108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा– **तीर्थंकर चौबीस के, हैं छियानवे क्षेत्रपाल।**
भक्तिभाव से आज, हम गाते हैं जयमाल।।

(पद्धरि छन्द)

जयो जय तीर्थंकर चौबीस, बने तुम मुक्ति वधू के ईश।
पाए जो पावन केवलज्ञान, बनाए समवशरण सुर आन।।
यक्ष यक्षी पाए स्थान, बने जो रक्षक देव महान।
चार दिश क्षेत्रपाल शुभ चार, द्वार के प्रतिहारी शुभकार।।
हुए प्रति तीर्थंकर के साथ, प्रभू पद विनत झुकाएँ माथ।
जगाएँ जिन पद में श्रद्धान, प्राप्त जो करते सम्यक्ज्ञान।।
आप जिन शासन के प्रतिपाल, कहाते अतः आप क्षेत्रपाल।
रहे श्री जिनके सेवाकार, वन्दना करते बारम्बार।।
कहे जो अष्ट ऋद्धियोंवान, पाए जो मतिश्रुतअवधि ज्ञान।
करें जिनशासन का उपकार, देवगुरु के प्रति श्रद्धाधार।।
करे जिन धर्म पे कोई प्रहार, देव ये कर देते संहार।
करे कोई सतियों का व्रतभंग, सिखाते हैं उनको भी ढंग।।
किसी से रखते हैं न वैर, मित्र ना इनका है कोई गैर।
रहे जिनके अन्दर अज्ञान, कहें इनको वे मिथ्यावान।।
करे जो देवों का अपलाप, कमाते हैं जीवन में पाप।
करो सब यथा योग्य सम्मान, बढ़ेगी जैनधर्म की शान।।
देव यह माता पिता समान, रखेंगे भक्तों का जो ध्यान।
करेंगे जग जन का उपकार, विशद सुखमय होगा संसार।।

दोहा– **क्षेत्रपाल जो भी रहे, क्षेत्र के रक्षाकार।**
महिमा गाते आपकी, करने जग उद्धार।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरजिन संबंधी यक्ष–यक्षिभ्यो जयमालापूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा – **भक्तों को हे देव! तुम, दो ऐसा वरदान।**
सुख शांती मय हों सभी, पावे सौख्य महान।।

इत्याशीर्वादः

चतुर्विंशति तीर्थंकर क्षेत्रपाल पूजा

स्थापना

दोहा- **ऋषभादिक चौबिस हुए, जिनवर महति महान।**
धर्म प्रवर्तन जो किए, दिए धर्म का ज्ञान।।
यक्ष यक्षिणी साथ में, किए बड़ा उपकार।
आमंत्रण करते यहाँ, करके हम मनुहार।।
जिन चरणों में आनकर, पाए सत् श्रद्धान।
साधर्मी हो आपका, करते हम आह्वान।।

ॐ आं क्रों ह्री श्री वृषभादिक महावीर पर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी सर्व यक्ष-यक्षिणी समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वननं। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल के यह कलश भराए, त्रय धार कराने लाए।
हे यक्ष यक्षिणी आओ, सम्मान यहाँ पर पाओ।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी सर्व यक्ष-यक्षिभ्यो जलं समर्पयामीति स्वाहा।

सुरभित ये गंध बनाए, हम भेंट चढ़ाने लाए।
हे यक्ष यक्षिणी आओ, सम्मान यहाँ पर पाओ।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी सर्व यक्ष-यक्षिभ्यो चन्दनं समर्पयामीति स्वाहा।

अक्षत के थाल भराए, हम भेंट में देने लाए।
हे यक्ष यक्षिणी आओ, सम्मान यहाँ पर पाओ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी सर्व यक्ष-यक्षिभ्यो अक्षतान् समर्पयामीति स्वाहा।

पुष्पों के थाल भराए, यह हर्षित मन से लाए।
हे यक्ष यक्षिणी आओ, सम्मान यहाँ पर पाओ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी सर्व यक्ष-यक्षिभ्यो पुष्पं समर्पयामीति स्वाहा।

ताजे नैवेद्य बनाए, यह भोग लगाने लाए।
हे यक्ष यक्षिणी आओ, सम्मान यहाँ पर पाओ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी सर्व यक्ष-यक्षिभ्यो नैवेद्यम् समर्पयामीति स्वाहा।

यह दीप जलाकर लाए, हम आरति गाने आए।
हे यक्ष यक्षिणी आओ, सम्मान यहाँ पर पाओ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी सर्व यक्ष-यक्षिभ्यो दीपं समर्पयामीति स्वाहा।

यह ताजी धूप बनाए, हम होम लगाने लाए।
हे यक्ष यक्षिणी आओ, सम्मान यहाँ पर पाओ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी सर्व यक्ष-यक्षिभ्यो धूपं समर्पयामीति स्वाहा।

फल ताजे लेकर आए, महिमामयी देने लाए।
हे यक्ष यक्षिणी आओ, सम्मान यहाँ पर पाओ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी सर्व यक्ष-यक्षिभ्यो फलं समर्पयामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य मिलाकर लाए, यह अर्घ्य भेंटने आए।
हे यक्ष यक्षिणी आओ, सम्मान यहाँ पर पाओ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी सर्व यक्ष-यक्षिभ्यो अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **शासन देवी देव हम, देते शांतीधार।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाएँ धर्म का सार।।

।। शान्तये शान्तिधारा। ।।दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

जाप्य : ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरजिनसंबंधी यक्ष-यक्षिणीभ्यो नमः (9,27,108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- **शासन देवी देवता, पावें पुण्य विशाल।**
भक्त आपकी भाव से, गाते हैं जयमाल।।

चौबोला छन्द

ऋषभदेव से महावीर तक, सबने पाया केवलज्ञान।
धन कुबेर ने समवशरण की, रचना आके करी महान।।
बारह कोठों की रचना की, आठ कोष्ठ में देव प्रधान।
छह कोठों में भवनत्रिक के, देव प्राप्त कीन्हे स्थान।।1।।
पुण्यवान भवनत्रिकवासी, पाते हैं जो सद् श्रद्धान।
जिन शासन के यक्ष यक्षिणी, बनते हैं जो महति महान।।

सहधर्मी की रक्षा करके, निज कर्त्तव्य निभाते हैं।
प्रमुख भक्त जो तीर्थंकर के, अतः आप कहलाते हैं।।2।।
जिनबिम्बों के साथ मूर्तियाँ, इनकी भी बनवाते हैं।
देकर के सम्मान भक्त कई, मन में बहु हर्षाते हैं।।
पार्श्वनाथ पर कमठासुर ने, क्रोधित हो उपसर्ग किया।
पद्मावतिधरणेन्द्र ने आके, भक्तिभाव से दूर किया।।3।।
अहिच्छत्र में पार्श्वप्रभू के, फण में शुभ श्लोक लिखे।
पात्र केसरी मुनी बने थे, वह श्लोक स्वयं पढ़ के।।
कुष्मांडिनी ने गुल्लिका जी बन, गोमटेश का न्हवन किया।
बाहुबली के पूर्णाभिषेक, कराने का सौभाग्य लिया।।4।।
कुन्दकुन्द जो गये गिरनारी, आद्य धर्म शुभ कौन रहा।
प्रकट हुई कुष्मांडिनी देवी, आदि दिगम्बर धर्म कहा।।
वाद हुआ अकलंक देव का, देवी चक्रेश्वरी आई।
किया प्रकाशित जिन शासन को, विजय वाद में दिलवाई।।5।।
मानतुंग की रक्षा करने, चक्रेश्वरी देवी आई।
समन्तभद्र मुनिवर की रक्षा, ज्वाला माँ ने थी गाई।।
सोमा सती चन्दना सीता, सब की रक्षा देव किए।
किसी की रक्षा की आकर के, किसी को जीवन दान दिए।।6।।
श्रद्धा से जो इन देवों का, यथा योग्य सम्मान करे।
उनके विघ्न दूर करके सुर, पुत्र सम्पदा दान करें।।
वस्त्राभूषण अर्घ्य फूल फल, हम सम्मान को लाए हैं।
आप हमारे मात पिता सम, भेंट चढ़ाने आए हैं।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरजिन संबंधी सर्व यक्ष-यक्षिणी जयमाला पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **आह्वानन् करते यहाँ होके भाव विभोर।**
जिन शासन की कीर्ति को, फैलाओ चहुँ ओर।।
जिन शासन के देव हो, माता पिता समान।
हम बच्चों का आपको ही रखना है ध्यान।।

इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

आदिनाथ जिन एवं क्षेत्रपाल अर्चा-1

(सखी छन्द)

अष्ट कर्म का नाश करो प्रभु, 'विशद' गुणों को पाना है।
अर्घ्य समर्पित करते हैं प्रभु, अष्टम भूपर जाना है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल 'जयभद्र' कहाए, रक्षक जिन शासन के गाए ।
आदिनाथ के सेवक जानो, सम्यक् श्रद्धाधारी मानो ।।1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री जयभद्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'विजयभद्र' है नाम निराला, सबकी रक्षा करने वाला ।
आदिनाथ के सेवक जानो, सम्यक् श्रद्धाधारी मानो ।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री विजयभद्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'अपराजित' को जीत ना पाए, कोई शत्रू कैसा आए ।
आदिनाथ के सेवक जानो, सम्यक श्रद्धाधारी मानो ।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री अपराजित क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल 'मणिभद्र' कहाए, शत्रू दल पर जो जय पाए ।
आदिनाथ के सेवक जानो, सम्यक् श्रद्धाधारी मानो ।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

आदिनाथ के यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल भी गाए चार ।
जिन शासन की रक्षा करते, भक्तों का करते उद्धार ।।
वस्त्रादिक तिल तेल और गुड़, से करते इनका सम्मान ।
तत्पर रहें सदा रक्षा में, अतः अर्घ्य यह किया प्रदान ।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वृषभनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **जग की शांती हेतु हम, देते शांतीधार ।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, पुष्प ले मंगलकार ।।

शांतये शांतिधारा ...... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अजितनाथ जिन एवं क्षेत्रपाल अर्चा-2

जल चंदन आदिक अष्ट द्रव्य, हम श्रेष्ठ चढ़ाने लाए हैं।
हो पद अनर्घ शुभ प्राप्त हमें, हम चरण शरण में आए हैं।।
श्री अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष ''विशद'' हे भगवन् ! मुक्ति वधू को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

'क्षेमभद्र' हैं रक्षाकारी, जिन भक्तों के जो उपकारी ।
अजितनाथ के सेवक जानो, सम्यक् श्रद्धा धारी मानो ।।1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री क्षेमभद्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'क्षान्तिभद्र' शान्ति के धारी, जिन शासन के रक्षाकारी ।
अजितनाथ के सेवक जानो, सम्यक श्रद्धा धारी मानो ।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री क्षान्तिभद्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल 'श्रीभद्र' कहाए, पूर्ण भद्रता निज में पाए ।।
अजितनाथ के सेवक जानो, सम्यक श्रद्धा धारी मानो ।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री श्रीभद्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'शांतिभद्र' शांती के दाता, भवि जीवों को देते साता ।
अजितनाथ के सेवक जानो, सम्यक श्रद्धा धारी मानो ।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री शांतिभद्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

अजितनाथ के यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल भी गाए चार ।
जिन शासन की रक्षा करते, भक्तों का करते उपकार ।।
वस्त्रादिक तिल तेल और गुड़, से करते इनका सम्मान ।
तत्पर रहे सदा रक्षा में, अतः अर्घ्य यह किया प्रदान ।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री अजितनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **जग की शांती हेतु हम, देते शांतीधार ।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, पुष्प ले मंगलकार ।।

शांतये शांतिधारा ...... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

संभवनाथ जिन एवं क्षेत्रपाल अर्चा-3

धर्म विशद है मंगलकारी, हम भी उसके हैं अधिकारी।
पद अनर्घ पाने को आए, अर्घ्य चढ़ाने को हम लाए।।
प्रभु हैं तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री संभव नाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वेसरी छन्द)

'वीरभद्र' की महिमा न्यारी, गाये परम वीरता धारी ।
संभव जिन के अर्चाकारी, क्षेत्रपाल गाए मनहारी ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वीरभद्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

श्री 'बलिभद्र' महाबल धारी, जिन शासन के रक्षाकारी ।
संभव जिन के अर्चाकारी, क्षेत्रपाल गाए मनहारी ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री बलिभद्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

श्री 'गुणभद्र' रहे गुण ग्राही, श्रद्धा धार बने शिव राही ।
संभव जिन के अर्चाकारी, क्षेत्रपाल गाए मनहारी ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री गुणभद्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'चन्द्रभद्र' चन्दा सम गाए, शीतल गुण निज में प्रगटाए ।
संभव जिन के अर्चाकारी, क्षेत्रपाल गाए मनहारी ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री चन्द्रभद्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

संभवनाथ के यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल भी गाए चार ।
जिन शासन की रक्षा करते, भक्तों का करते उपकार ।।
वस्त्रादिक तिल तेल और गुड़, से करते इनका सम्मान ।
तत्पर रहे सदा रक्षा में, अतः अर्घ्य यह किया प्रदान ।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री संभवनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **जग की शांति हेतु हम, देते शांतीधार ।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, पुष्प ले मंगलकार ।।

शांतये शांतिधारा ...... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अभिनन्दननाथ जिन एवं क्षेत्रपाल अर्चा-4

लोकालोक अनादी शाश्वत, पर द्रव्यों से युक्त कहा।
सप्त तत्त्व अरु पुण्य पाप की, श्रद्धा के बिन बना रहा।
पद अनर्घ देने वाली है, अर्चा जिन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवल ज्ञान की।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन नाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छन्द)

क्षेत्रपाल 'महाभद्र' कहाए, भक्ती कर महिमा दिखलाए ।
अभिनन्दन पद शीश झुकाए, अतः श्रेष्ठ महिमा को पाए।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री महाभद्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'भद्रभद्र' के हम गुण गाएँ, इनको अपने हृदय बसाएँ ।
अभिनन्दन पद शीश झुकाए, अतः श्रेष्ठ महिमा को पाए।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री भद्रभद्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल 'सतभद्र' हमारे, जीवन में तुम बनो सहारे ।
अभिनन्दन पद शीश झुकाए, अतः श्रेष्ठ महिमा को पाए।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सतभद्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'दानभद्र' करुणा के धारी, जैन धर्म के रहे प्रचारी ।
अभिनन्दन नाथ पद शीश झुकाए, अतः श्रेष्ठ महिमा को पाए।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री दानभद्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

अभिनन्दननाथ के यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल भी गाए चार ।
जिन शासन की रक्षा करते, भक्तों का करते उपकार ।।
वस्त्रादिक तिल तेल और गुड़, से करते इनका सम्मान ।
तत्पर रहे सदा रक्षा में, अतः अर्घ्य यह किया प्रदान ।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री अभिनन्दननाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **जग की शांती हेतु हम, देते शांतीधार ।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, पुष्प ले मंगलकार ।।

शांतये शांतिधारा ...... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

सुमतिनाथ जिन एवं क्षेत्रपाल अर्चा-5

सिद्ध शिला पर वास हेतु प्रभु, अष्ट कर्म का नाश किए।
क्षायिक ज्ञान प्रकट कर अनुपम, पद अनर्घ में वास किए।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करता मैं सम्यक् अर्चन।
पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु हम, करते हैं शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमति नाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतियादाम छन्द

विशद 'कल्याण चंद्र' शुभ नाम, क्षेत्र रक्षण का पाया काम ।
सुमति जिनवर के चरणों आन, करे जो भाव सहित गुणगान।1।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कलयाणचंद्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

कहाए क्षेत्रपाल 'महाचन्द्र', किए जिन भक्ती हो आनन्द ।
सुमति जिनवर के चरणों आन, करे जो भाव सहित गुणगान।।2।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री महाचन्द्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

नाम 'जयचन्द्र' रहा शुभकार, क्षेत्र का रक्षक है मनहार ।
सुमति जिनवर के चरणों आन, करे जो भाव सहित गुणगान।।3।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री जयचन्द्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल 'पदमचन्द्र' शुभ नाम, प्रभु चरणों में करे प्रणाम ।
सुमति जिनवर के चरणों आन, करे जो भाव सहित गुणगान।।4।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पदमचन्द्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सुमतिनाथ के यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल भी गाए चार ।
जिन शासन की रक्षा करते, भक्तों का करते उपकार ।।
वस्त्रादिक तिल तेल और गुड़, से करते इनका सम्मान ।
तत्पर रहे सदा रक्षा में, अतः अर्घ्य यह किया प्रदान ।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **जग की शांती हेतु हम, देते शांतीधार ।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, पुष्प ले मंगलकार ।।

शांतये शांतिधारा ...... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पद्मप्रभ जिन एवं क्षेत्रपाल अर्चा-6

प्रासुक नीर सुगंध सुअक्षत, पुष्प चरू ले दीप जलाय।
धूप और फल अष्ट द्रव्य ले, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्प्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मोतियादाम छन्द)

नाम है 'कलाचन्द्र' मनहार, क्षेत्रपाल करता धर्म प्रचार ।
पद्म प्रभ के चरणों में आन, करे जो भाव सहित गुणगान।।1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कलाचन्द्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल 'कल्पचन्द्र' शुभ नाम, करे जिनपद में जो विश्राम ।
पद्म प्रभ के चरणों में आन, करे जो भाव सहित गुणगान।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कल्पचन्द्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल 'कुमुतचन्द्र' गुण खान, कुमत का खण्डन करे प्रधान।
पद्म प्रभ के चरणों में आन, करे जो भाव सहित गुणगान।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कुमुतचन्द्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'कुमुदचंद' गाया चंद्र समान, दिखाए भक्ती अतिशय वान।
पद्म प्रभ के चरणों में आन, करे जो भाव सहित गुणगान।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कुमुदचन्द्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पद्मप्रभ के यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल भी गाए चार ।
जिन शासन की रक्षा करते, भक्तों का करते उपकार ।।
वस्त्रादिक तिल तेल और गुड़, से करते इनका सम्मान ।
तत्पर रहे सदा रक्षा में, अतः अर्घ्य यह किया प्रदान ।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पद्मप्रभनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **जग की शांती हेतु हम, देते शांतीधार ।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, पुष्प ले मंगलकार ।।

शांतये शांतिधारा ...... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

सुपार्श्वनाथ जिन एवं क्षेत्रपाल अर्चा-7

संसार सुखों की चाहत में, मन मेरा बहु ललचाया है।
हम भ्रमर बने भटके दर-दर, पर पद अनर्घ न पाया है।।
अब प्राप्त हमें हो पद अनर्घ, हम यही भावना भाते हैं।
अतएव चरण में जिन सुपार्श्व,यह पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्व जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मोतियादाम छन्द)

नाम है 'विद्याचन्द्र' महान, क्षेत्र की रक्षा करता आन ।
कहाए प्रभू सुपारसनाथ, प्रभू के चरण झुकाए माथ ।।1

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री विद्याचन्द्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल कहलाए 'गुणचन्द्र', करे जिन भक्ती हो निर्द्वन्द।
कहाए प्रभू सुपारसनाथ, प्रभू के चरण झुकाए माथ ।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री गुणचन्द्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल 'खेमचन्द्र' शुभकार, करे जिन भक्ती मंगलकार।
कहाए प्रभू सुपारसनाथ, प्रभू के चरण झुकाए माथ ।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री खेमचन्द्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'विनयचन्द्र' करता विनय विशेष, क्षेत्रपाल नाशे सारे क्लेश।
कहाए प्रभू सुपारसनाथ, प्रभू के चरण झुकाए माथ ।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री विनयचन्द्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सुपार्श्वनाथ के यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल भी गाए चार ।
जिन शासन की रक्षा करते, भक्तों का करते उपकार ।।
वस्त्रादिक तिल तेल और गुड़, से करते इनका सम्मान ।
तत्पर रहे सदा रक्षा में, अत: अर्घ्य यह किया प्रदान ।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **जग की शांती हेतु हम, देते शांतीधार।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, पुष्प ले मंगलकार।।

शांतये शांतिधारा ...... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चन्द्रप्रभु जिन एवं क्षेत्रपाल अर्चा-8

जल गंध आदिक द्रव्य वसु ले, अर्घ्य शुभम् बनाए हैं।
शाश्वत सुखों की प्राप्ति हेतू, थाल भरकर लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द मोतियादाम)

कहाए 'सोमकीर्ति' क्षेत्रपाल, करे भक्तों को मालामाल।
चन्द्रप्रभु का है पावन भक्त, रहे जो भक्ती में अनुरक्त ।।1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सोमकीर्ति क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

कहाए 'सूर्यकान्त' क्षेत्रपाल, शत्रुदल का जो गाया काल ।
चन्द्रप्रभु का है पावन भक्त, रहे जो भक्ती में अनुरक्त ।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सूर्यकान्त क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल 'शुभ्रकान्ति' कहलाए, भक्ति करके महिमा दिखलाए।
चन्द्रप्रभु का है पावन भक्त, रहे जो भक्ती में अनुरक्त ।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री शुभ्रकान्ति क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'हेमकांति' क्षेत्रपाल का नाम, करें जिन चरणों विशद प्रणाम।
चन्द्रप्रभु का है पावन भक्त, रहे जो भक्ती में अनुरक्त ।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री हेमकांति क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

चन्द्रप्रभु के यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल भी गाए चार ।
जिन शासन की रक्षा करते, भक्तों का करते उपकार ।।
वस्त्रादिक तिल तेल और गुड़, से करते इनका सम्मान ।
तत्पर रहे सदा रक्षा में, अतः अर्घ्य यह किया प्रदान ।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री चन्द्रप्रभस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **जग की शांती हेतु हम, देते शांतीधार।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, पुष्प ले मंगलकार।।

शांतये शांतिधारा ...... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पुष्पदंत जिन एवं क्षेत्रपाल अर्चा-9

निर्मल जल सम शुद्ध हृदय, चंदन सम मनहर शीतलता।
अक्षत सम अक्षय भाव रहे, है सुमन समान सुकोमलता।।
हैं मिष्ठ वचन मोदक जैसे, दीपक सम ज्ञान प्रकाश रहा।
यश धूप समान सुविकसित कर, फल श्रीफल जैसे सुफलअहा।।
अपने मन के शुभ भावों का, यह चरणों अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हम परम पूज्य जिन पुष्पदंत, को विशद भाव से ध्याते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

'वज्रकांति' क्षेत्रपाल जानो, जो क्षेत्र का रक्षक मानो ।
जिन पुष्पदंत पद आए, जो सादर शीश झुकाए ।।1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वज्रकांति क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'वीरकांति' क्षेत्रपाल गाया, जो भक्त प्रभू का गाया।
जिन पुष्पदंत पद आए, जो सादर शीश झुकाए ।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वीरकांति क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

है 'विष्णुकांति' शुभकारी, क्षेत्रपाल श्रेष्ठ मनहारी ।
जिन पुष्पदंत पद आए, जो सादर शीश झुकाए ।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री विष्णुकांति क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'चन्द्रकांति' क्षेत्रपाल भाई, जिन भक्ति करे सुखदायी ।
जिन पुष्पदंत पद आए, जो सादर शीश झुकाए ।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री चन्द्रकांति क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पुष्पदंत के यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल भी गाए चार ।
जिन शासन की रक्षा करते, भक्तों का करते उपकार ।।
वस्त्रादिक तिल तेल और गुड़, से करते इनका सम्मान ।
तत्पर रहे सदा रक्षा में, अतः अर्घ्य यह किया प्रदान ।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पुष्पदंतनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **जग की शांती हेतु हम, देते शांतीधार ।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, पुष्प ले मंगलकार ।।

शांतये शांतिधारा ...... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शीतलनाथ जिन एवं क्षेत्रपाल अर्चा-10

अष्ट द्रव्य ले मंगलकार, अर्घ्य चढ़ाएँ अपरम्पार।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार ।।
पद अनर्घ हमको मिल जाय, रत्नत्रय पा मुक्ति पाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार ।।

ॐ ह्रीं श्री शीतल नाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

'शतवीर्य' नाम का धारी, क्षेत्रपाल रहा मनहारी।
प्रभु शीतलनाथ को ध्याए, पद सादर शीश झुकाए।।1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री शतवीर्य क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'महावीर्य' नाम जो पाए, क्षेत्रपाल प्रभु पद आए ।
प्रभु शीतलनाथ को ध्याए, पद सादर शीश झुकाए।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री महावीर्य क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'बलवीर्य' नाम शुभ जानो, जो क्षेत्र का रक्षक मानो ।
प्रभु शीतलनाथ को ध्याए, पद सादर शीश झुकाए।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री बलवीर्य क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'कीर्तिवीर्य' गुणों का धारी, है क्षेत्र शुभकारी ।
प्रभु शीतलनाथ को ध्याए, पद सादर शीश झुकाए।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कीर्तिवीर्य क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पुष्पदंत के यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल भी गाए चार ।
जिन शासन की रक्षा करते, भक्तों का करते उपकार।।
वस्त्रादिक तिल तेल और गुड़, से करते इनका सम्मान।
तत्पर रहे सदा रक्षा में, अतः अर्घ्य यह किया प्रदान।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री शीतलनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **जग की शांती हेतु हम, देते शांतीधार ।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, पुष्प ले मंगलकार ।।

शांतये शांतिधारा ...... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्रेयांसनाथ जिन एवं क्षेत्रपाल अर्चा-11

प्रभु पद अनर्घ को पाये, हम अनुपम थाल भराये।
यह आठों द्रव्य मिलाते, प्रभु चरणों श्रेष्ठ चढ़ाते।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल छन्द

क्षेत्रपाल 'तीर्थरुचि' गाए, तीर्थों की शान बढ़ाए ।
जिनवर श्रेयांस कहलाए, जिनपद जो पूज रचाए।।1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री तीर्थरुचि क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

है 'भावरुचि' शुभकारी, क्षेत्रपाल रहा मनहारी ।
जिनवर श्रेयांस कहलाए, जिनपद जो पूज रचाए।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री भावरुचि क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल 'भव्यरुचि' जानो, जो निकट भव्य हो मानो।
जिनवर श्रेयांस कहलाए, जिनपद जो पूज रचाए।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री भव्यरुचि क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल 'शांतिरुचि' भाई, है जग को शांति प्रदायी ।
जिनवर श्रेयांस कहलाए, जिनपद जो पूज रचाए।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री शांतिरुचि क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

जिन श्रेयांस के यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल भी गाए चार ।
जिन शासन की रक्षा करते, भक्तों का करते सम्मान।।
वस्त्रादिक तिल तेल और गुड़, से करते इनका उपकार।
तत्पर रहे सदा रक्षा में, अतः अर्घ्य यह किया प्रदान।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री श्रेयांसनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **जग की शांति हेतु हम, देते शांतिधार ।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, पुष्प ले मंगलकार ।।

शांतये शांतिधारा ...... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

वासुपूज्य जिन एवं क्षेत्रपाल अर्चा-12

जग में सद् असद् द्रव्य जो हैं, उन सबके अर्घ बताए हैं।
अब पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु, हम अर्घ बनाकर लाए हैं ।।
हम पद अनर्घ को पा जाएँ, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी ।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

क्षेत्रपाल 'लब्धिरुचि' आए, जिन चरणों जगह बनाए ।
जो वासुपूज्य पद ध्याए, नत सादर शीश झुकाए ।।1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री लब्धिरुचि क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

है 'तत्त्वरुचि' सद्ज्ञानी, क्षेत्रपाल जगत कल्याणी ।
जो वासुपूज्य पद ध्याए, नत सादर शीश झुकाए ।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री तत्वरुचि क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

है 'सम्यकरुचि' शुभकारी, क्षेत्रपाल ज्ञान का धारी ।
जो वासुपूज्य पद ध्याए, नत सादर शीश झुकाए ।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सम्यकरुचि क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल 'वाद्यरुचि' आवे, श्री जिनकी महिमा गावे ।
जो वासुपूज्य पद ध्याए, नत सादर शीश झुकाए ।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वाद्यरुचि क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

वासुपूज्य के यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल भी गाए चार ।
जिन शासन की रक्षा करते, भक्तों का करते उपकार।।
वस्त्रादिक तिल तेल और गुड़, से करते इनका सम्मान।
तत्पर रहे सदा रक्षा में, अतः अर्घ्य यह किया प्रदान।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **जग की शांती हेतु हम, देते शांतीधार ।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, पुष्प ले मंगलकार ।।

शांतये शांतिधारा ...... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

विमलनाथ जिन एवं क्षेत्रपाल अर्चा-13

पाएँ हम सुपद अनर्घ, अर्घ्य देने लाए।
होवे सिद्धों में वास, भावना यह भाए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धरि छन्द)

है 'विमलभक्ति' जिसका सुनाम, जो जिनपद में करता प्रणाम।
श्री विमलनाथ पद क्षेत्रपाल, पद वन्दन करता है त्रिकाल ।।1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री विमलभक्ति क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'आराध्यरुची' आराध्य जान, गुण गाता है नत हो महान ।
श्री विमलनाथ पद क्षेत्रपाल, पद वन्दन करता है त्रिकाल ।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री आराध्यरुचि क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

है 'वैद्यरुचि' शुभ सुची वान, दे भक्तों को आरोग्य दान ।
श्री विमलनाथ पद क्षेत्रपाल, पद वन्दन करता है त्रिकाल ।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वैद्यरुचि क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

है 'वाद्यरुची' जग में महान, जो वाद्य बजाए जग प्रधान ।
श्री विमलनाथ पद क्षेत्रपाल, पद वन्दन करता है त्रिकाल ।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वाद्यरुचि क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

विमलनाथ के यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल हैं चार ।
जिन शासन की रक्षा कारी, गाए मंगलकार ।।
गुड़ तिल तेल और वस्त्रादिक, से करते सम्मान ।
विशद अर्चना करो भाव से, करते अर्घ्य प्रदान।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री विमलनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **सारे जग में शांति हो, देते शांति धार ।**
पुष्पांजलि करते विशद, हम ये मंगलकार ।।

शांतये शांतिधारा ...... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अनन्तनाथ जिन एवं क्षेत्रपाल अर्चा-14

जल चन्दन आदि मिलाय, अर्घ्य बनाते हैं।
पद पाने हेतु अनर्घ, श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ!, भाग्य विधाता हो।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धरि छन्द)

'स्वभाव' नाम धारी हे प्रधान, जिसकी है जग में अलग शान।
जिनवर अनन्त का क्षेत्रपाल, पद वन्दन करता है त्रिकाल ।।1।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री स्वभाव क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'परभाव' नाम धारी कहाए, महिमा जिनवर की विशद गाए।
जिनवर अनन्त का क्षेत्रपाल, पद वन्दन करता है त्रिकाल ।।2।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री परभाव क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'अनुपम्य' नाम धारी विशाल, श्री जिनवर का है रक्षपाल ।
जिनवर अनन्त का क्षेत्रपाल, पद वन्दन करता है त्रिकाल ।।3।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री अपुपम्य क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

है 'सहजानंद' आनन्दवान, जो सरल सहज जग में प्रधान ।
जिनवर अनन्त का क्षेत्रपाल, पद वन्दन करता है त्रिकाल ।।4।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सहजानंद क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

अनन्तनाथ के यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल हैं चार ।
जिन शासन के रक्षा कारी, गाए मंगलकार ।।
गुड़ तिल तेल और वस्त्रादिक, से करते सम्मान ।
विशद अर्चना करो भाव से, करते अर्घ्य प्रदान ।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री अनन्तनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **सारे जग में शांती हो, देते शांतीधार ।**
पुष्पांजलि करते विशद, हम ये मंगलकार ।।

शांतये शांतिधारा ...... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

धर्मनाथ जिन एवं क्षेत्रपाल अर्चा-15

प्रभु आठों द्रव्य मिलाए, यह पावन अर्घ्य बनाए।
हम पद अनर्घ पा जाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धरि छन्द)

कहलाय 'धर्मकर' क्षेत्रपाल, जो जीवों को करता निहाल।
श्री धर्मनाथ जिन चरण आन, जो करे भाव से गुणोगान।।1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री धर्मकर क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

है 'धर्मकरी' जिसका सुनाम, जिन पद में जो करता प्रणाम।
श्री धर्मनाथ जिन चरण आन, जो करे भाव से गुणोगान।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री धर्मकरी क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

है 'शान्तकर्म' शुभ शांतिवान, जो श्री जिनवर का करे ध्यान।
श्री धर्मनाथ जिन चरण आन, जो करे भाव से गुणोगान।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री शान्तकर्म क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं मर्पयामीति स्वाहा।

कहलाए क्षेत्रपाल 'विनयनाम', जिन पद में जिसका रहा धाम।
श्री धर्मनाथ जिन चरण आन, जो करे भाव से गुणोगान।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री विनयनाम क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

धर्मनाथ के यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल हैं चार ।
जिन शासन की रक्षा कारी, गाए मंगलकार ।।
गुड़ तिल तेल और वस्त्रादिक, से करते सम्मान ।
विशद अर्चना करो भाव से, करते अर्घ्य प्रदान ।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री धर्मनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **सारे जग में शांती हो, देते शांतीधार ।**
पुष्पांजलि करते विशद, हम ये मंगलकार ।।

शांतये शांतिधारा ...... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शांतिनाथ जिन एवं क्षेत्रपाल अर्चा-16

यह अष्ट द्रव्य हम लाए हैं, हमने शुभ अर्घ्य बनाया है।
करने अनर्घ पद प्राप्त प्रभू, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाया है।।
हमको डर लगता कर्मों से, हे नाथ! दूर मेरा भय हो।
हम अर्घ्य चढ़ाते भाव सहित मम् जीवन भी शांतीमय हो।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धरि छन्द)

क्षेत्रपाल कहाए 'सिद्धसेन', जिसकी जग को है श्रेष्ठ देन।
श्री शांतिनाथ जिनकी अपार, महिमा जो गाए बार-बार।।1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सिद्धसेन क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'महासेन' कहाए क्षेत्रपाल, करता जग जीवों को निहाल ।
श्री शांतिनाथ जिनकी अपार, महिमा जो गाए बार-बार।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री महासेन क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

है 'लोकसेन' जग में महान, जिन शासन का रक्षक प्रधान ।
श्री शांतिनाथ जिनकी अपार, महिमा जो गाए बार-बार।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री लोकसेन क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

है 'विनयकेतु' पावन सुनाम, क्षेत्रपाल करे जिन पद प्रणाम।
श्री शांतिनाथ जिनकी अपार, महिमा जो गाए बार-बार।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री विनयकेतु क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

शान्तिनाथ के यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल हैं चार ।
जिन शासन के रक्षा कारी, गाए मंगलकार ।।
गुड़ तिल तेल और वस्त्रादिक, से करते सम्मान।
विशद अर्चना करो भाव से , करते अर्घ्य प्रदान ।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री शांतिनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **सारे जग में शांति हो, देते शांतीधार।**
पुष्पांजलि करते विशद, हम ये मंगलकार ।।

शांतये शांतिधारा ...... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

कुन्थुनाथ जिन एवं क्षेत्रपाल अर्चा–17

जल चन्दन अक्षत पुष्पादिक, चरुवर के दीप जलाते हैं।
धूप और फल साथ मिलाकर, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा छन्द)

'यक्षनाथ' क्षेत्रपाल कहाए, जग जन रक्षाकारी ।
छोड़ मूढ़ता हो श्रद्धानी, भक्ति करे मनहारी ।।
कुन्थुनाथ के चरण शरण में, पूजा नित्य रचावे ।
भक्ति भाव से महिमा गाके, सादर शीश झुकावे।।1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री यक्षनाथ क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'भूमिनाथ' भूमी का रक्षक, अतिशय महिमाकारी ।
जिन चरणों का भक्त कहाए, जग में विस्मयकारी ।।
कुन्थुनाथ के चरण शरण में, पूजा नित्य रचावे ।
भक्ति भाव से महिमा गाके, सादर शीश झुकावे।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री भूमिनाथ क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

देव मूढ़ता तजने वाला, 'देशनाथ' कहलाए ।
देश की रक्षा करने वाला, क्षेत्रपाल मन भाए ।।
कुन्थुनाथ के चरण शरण में, पूजा नित्य रचावे ।
भक्ति भाव से महिमा गाके, सादर शीश झुकावे।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री देशनाथ क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'विनयनाथ' शुभ विनय का धारी, क्षेत्रपाल शुभ जानो।
गुरू मूढ़ता तजने वाला, सम्यक्त्वी हो मानो ।।
कुन्थुनाथ के चरण शरण में, पूजा नित्य रचावे ।
भक्ति भाव से महिमा गाके, सादर शीश झुकावे।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री विनयनाथ क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

कुन्थुनाथ के यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल हैं चार ।
जिन शासन के रक्षा कारी, गाए मंगलकार ।।
गुड़ तिल तेल और वस्त्रादिक, से करते सम्मान ।
विशद अर्चना करो भाव से, करते अर्घ्य प्रदान ।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कुनथुनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **सारे जग में शांति हो, देते शांती धार ।**
पुष्पांजलि करते विशद, हम ये मंगलकार ।।

शांतये शांतिधारा ...... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अरहनाथ जिन एवं क्षेत्रपाल अर्चा-18

(रोला छन्द)

मिलाके सभी द्रव्य का अर्घ्य लाए, परम श्रेष्ठ शाश्वत सुपद पाने आए।
प्रभो ! आपके हम गुणोगान गाते, अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रौद्र ध्यान को तजने वाला, है 'गिरिनाथ' निराला ।
क्षेत्रपाल आयतन की रक्षा, भाव से करने वाला ।।
अरहनाथ के श्री चरणों में, नित प्रति ध्यान लगाए ।
भक्तिभाव से नत हो करके, महिमा मंगल गाए ।।1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री गिरिनाथ क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'गह्वरनाथ' द्वार पे रहकर, रक्षा करने वाला ।
मिथ्यात्वी जीवों की मिथ्यामति को हरने वाला ।।
अरहनाथ के श्री चरणों में, नित प्रति ध्यान लगाए ।
भक्तिभाव से नत हो करके, महिमा मंगल गाए ।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री गह्वरनाथ क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'वरुणनाथ' धन धान्य प्रदायी, जीवों का हितकारी ।
जैन धर्म की जो प्रभावना, करता मंगलकारी ।।
अरहनाथ के श्री चरणों में, नित प्रति ध्यान लगाए ।
भक्तिभाव से नत हो करके, महिमा मंगल गाए ।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वरुणनाथ क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'मैत्रनाथ' मैत्री रखता है, जो है सद्श्रद्धानी ।
जिन भक्तों के लिए कहा है, पावन जो कल्याणी ।।
अरहनाथ के श्री चरणों में, नित प्रति ध्यान लगाए ।
भक्तिभाव से नत हो करके, महिमा मंगल गाए ।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मैत्रनाथ क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

अरहनाथ के यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल चउ गाए ।
जिन शासन के रक्षा कारी, मंगलकार बताए ।।
गुड़ तिल तेल और वस्त्रादिक, से करते सम्मान ।
विशद अर्चना करो भाव से, करते अर्घ्य प्रदान ।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री अरहनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **सारे जग में शांति हो, देते शांती धार ।**
पुष्पांजलि करते विशद, हम ये मंगलकार ।।

शांतये शांतिधारा ...... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

मल्लिनाथ जिन एवं क्षेत्रपाल अर्चा-19

संसार वास दुखकारी है, हम इससे अब घबराए हैं।
पाने अनर्घ पद नाथ! परम, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिन का दर्शन, इस जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से शुभ चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

चक्रवर्ति कृत कल्पतरु शुभ, जो विधान में जावे।
क्षेत्रपाल इस क्षेत्र का रक्षक, 'क्षितिप' नाम को पावे ।
मल्लिनाथ के श्री चरणों में, नित प्रति ध्यान लगाए ।
भक्तिभाव से नत हो करके, महिमा मंगल गाए ।।1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री क्षितिप क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

इन्द्र ध्वज आदिक विधान में, महिमा श्रेष्ठ दिखावे।
क्षेत्रपाल है 'भवय' **भाव से, जो आनन्द मनावे ।।**
मल्लिनाथ के श्री चरणों में, नित प्रति ध्यान लगाए ।
भक्तिभाव से नत हो करके, महिमा मंगल गाए ।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री भवय क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पंचकल्याण आदि में जाकर, क्षमा क्षमा गुण गावे।
भवि जीवों में पावन शांती, 'शान्ती' श्रेष्ठ जगावे ।।
मल्लिनाथ के श्री चरणों में, नित प्रति ध्यान लगाए ।
भक्तिभाव से नत हो करके, महिमा मंगल गाए ।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री शान्ति क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल 'सवक्षेत्र' में जाके, महिमा शुभ दिखलावे ।
नृत्य गान कर हर्ष मनाए, श्री जिन के गुण गावे।।
अरहनाथ के श्री चरणों में, नित प्रति ध्यान लगाए ।
भक्तिभाव से नत हो करके, महिमा मंगल गाए ।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सवक्षेत्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ के यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल चउ गाए ।
जिन शासन की रक्षा कारी, मंगलकार बताए ।।
गुड़ तिल तेल और वस्त्रादिक, से करते सम्मान ।
विशद अर्चना करो भाव से , करते अर्घ्य प्रदान।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मल्लिनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **सारे जग में शांति हो, देते शांती धार ।**
पुष्पांजलि करते विशद, हम ये मंगलकार ।।

शांतये शांतिधारा ...... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

मुनिसुव्रतनाथ जिन एवं क्षेत्रपाल अर्चा–20

भेद ज्ञान का सूर्य उदय कर, अविनाशी पद प्राप्त करूँ।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, उर अनर्घ पद व्याप्त करूँ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

मुनिसुव्रत का क्षेत्रपाल है, 'तन्द्रराज' शुभकारी ।
निज शक्ती से धर्म प्रकाशे, गाया जो अघहारी ।।
जिन शासन का रक्षाकारी, जिन पद शीश झुकाए ।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र की, अर्चा करने आए।।1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री तन्द्रराज क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

श्री 'गणराज' गणों का स्वामी, जग जन रक्षाकारी ।
मुनिसुव्रत के चरणों भक्ती, करता मंगलकारी ।।
जिन शासन का रक्षाकारी, जिन पद शीश झुकाए ।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र की, अर्चा करने आए।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री गणराज क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल 'कल्याणराज' है, कल्याणक में आए ।
मुनिसुव्रत की भक्ती करने, का सौभाग्य जगाए ।।
जिन शासन का रक्षाकारी, जिन पद शीश झुकाए ।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र की, अर्चा करने आए।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कल्याणराज क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

महिमा 'भव्यराज' की पावन, सारा जग यह गाए ।
मुनिसुव्रत की अर्चा करके, पावन हर्ष मनाए ।।
जिन शासन का रक्षाकारी, जिन पद शीश झुकाए ।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र की, अर्चा करने आए।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री भव्यराज क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रतनाथ के यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल चउ गाए ।
जिन शासन के रक्षा कारी, मंगलकार बताए ।।
गुड़ तिल तेल और वस्त्रादिक, से करते सम्मान ।
विशद अर्चना करो भाव से, करते अर्घ्य प्रदान।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **सारे जग में शांति हो, देते शांती धार ।**
पुष्पांजलि करते विशद, हम ये मंगलकार ।।

शांतये शांतिधारा ...... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नमिनाथ जिन एवं क्षेत्रपाल अर्चा-21

हम अवगुण को ही नाथ सदा, निज के गुण कहते आए हैं।
अब पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
हे नमीनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विष्णुपद छन्द)

क्षेत्रपाल श्री 'कपिल' कहाए, नमि जिनका भाई ।
श्री जिन की अर्चा कर पाई, जिसने प्रभुताई ।।
नमि जिनवर के चरण शरण, में भाव सहित आए ।
भक्ति भाव से करें वन्दना, पावन गुण गाए ।।1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कपिल क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल श्री नमि जिनवर का, 'वटुक' कहा जाए ।
जिन अर्चा करके जो भारी, मन में हर्षाए ।।
नमि जिनवर के चरण शरण, के भाव सहित आए।
भक्ति भाव से करे वन्दना, पावन गुण गाए ।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वटुक क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'भैरवनाथ' बजाके भेरी, जिन मंदिर आए ।
नमि जिनवर की करे आरती, पावन गुण गाए।।
नमि जिनवर के चरण शरण, के भाव सहित आए।
भक्ति भाव से करे वन्दना, पावन गुण गाए ।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री भैरवनाथ क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'मल्लकाख्य' शुभ नाम का धारी, क्षेत्रपाल जानो ।
क्षेत्र की रक्षा करने वाला, रक्षक है मानो ।।
नमि जिनवर के चरण शरण, में भाव सहित आए ।
भक्ति भाव से करे वन्दना, पावन गुण गाए ।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मल्लकाख्य क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

नमीनाथ के यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल हैं चार ।
जिन शासन की रक्षा कारी, गाए मंगलकार ।।
गुड़ तिल तेल और वस्त्रादिक, से करते सम्मान ।
विशद अर्चना करो भाव से, करते अर्घ्य प्रदान।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री नमिनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **सारे जग में शांति हो, देते शांती धार ।**
पुष्पांजलि करते विशद, हम ये मंगलकार ।।

शांतये शांतिधारा ...... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नेमिनाथ जिन एवं क्षेत्रपाल अर्चा-22

अविचल अनर्घ पद पाने का, प्रभु हमने भाव जगाया है।
अत एव प्रभु वसु द्रव्यों का, अनुपम यह अर्घ्य बनाया है।।
दो पद अनर्घ हमको स्वामी, यह अर्घ्य संजोकर लाए हैं।
राहू अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल 'कोकल' कहलाए, कोकिल सम भाई ।
रहा मधुर भाषी कोयल सम, फैली प्रभुताई ।।
नेमिनाथ पद वन्दन करने, भाव सहित आए ।
तीन योग से श्री जिनेन्द्र की, महिमा जो गाए ।।1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कोकल क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

नेमिनाथ का क्षेत्रपाल है, जो 'खगनाम' कहा ।
जिन शासन का रक्षक भाई, जिन का भक्त रहा ।।
नेमिनाथ पद वन्दन करने, भाव सहित आए ।
तीन योग से श्री जिनेन्द्र की, महिमा जो गाए ।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री खगनाम क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

नाम रहा 'त्रिनेत्र' आपका, पावन शुभकारी ।
नेमिनाथ के क्षेत्रपाल तुम, हो मंगलकारी ।।
नेमिनाथ पद वन्दन करने, भाव सहित आए ।
तीन योग से श्री जिनेन्द्र की, महिमा जो गाए ।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री त्रिनेत्र क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

नाम 'कलिंग' **आपका पावन, जग जन हितकारी ।**
रक्षक आप क्षेत्र के अनुपम, तुम हो अघहारी ।।
नेमिनाथ पद वन्दन करने, भाव सहित आए ।
तीन योग से श्री जिनेन्द्र की, महिमा जो गाए ।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कलिंग क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

नेमिनाथ के यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल हैं चार ।
जिन शासन के रक्षा कारी, गाए मंगलकार ।।
गुड़ तिल तेल और वस्त्रादिक, से करते सम्मान ।
विशद अर्चना करो भाव से, करते अर्घ्य प्रदान।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री नेमिनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **सारे जग में शांति हो, देते शांती धार ।**
पुष्पांजलि करते विशद, हम ये मंगलकार ।।

शांतये शांतिधारा ...... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पार्श्वनाथ जिन एवं क्षेपपाल अर्चा-23

जल फल आदिक अष्ट द्रव्य से, अर्घ समर्पित करते हैं।
पूजन करके पार्श्वनाथ की, कोष पुण्य से भरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभू की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विष्णुपद छन्द)

कहे 'कीर्तिधर' क्षेत्रपाल जी, महिमा के धारी ।
श्री जिनेन्द्र की चरण वन्दना, करते शुभकारी ।।
पार्श्वप्रभू के चरण में आके, अतिशय गुण गाते ।
जिन शासन के रक्षक बनके, महिमा दिखलाते।।1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कीर्तिधर क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'स्मृतिधर' स्मृति में प्रभु की, भक्ति सदा धरते ।
हो उपसर्ग कदाचित् कोई, आके जो हरते ।।
पार्श्वप्रभू के चरण में आके, अतिशय गुण गाते ।
जिन शासन के रक्षक बनके, महिमा दिखलाते।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री स्मृतिधर क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

कहे 'विनयधर' विनय वान शुभ, क्षेत्रपाल भाई ।
विनय सहित गुण गाते नत हो, प्रभु के शुभदायी ।।
पार्श्वप्रभू के चरण में आके, अतिशय गुण गाते ।
जिन शासन के रक्षक बनके, महिमा दिखलाते।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री विनयधर क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल का नाम 'अब्जधर', पावन शुभकारी ।
विशद भाव से भक्ती करते, जिनकी मनहारी ।।
पार्श्वप्रभू के चरण में आके, अतिशय गुण गाते ।
जिन शासन रक्षक बनके, महिमा दिखलाते ।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री अब्जधर क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

श्री पार्श्व के यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल हैं चार ।
जिन शासन के रक्षा कारी, गाए मंगलकार ।।
गुड़ तिल तेल और वस्त्रादिक, से करते सम्मान ।
विशद अर्चना करो भाव से, करते अर्घ्य प्रदान।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पार्श्वनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **सारे जग में शांति हो, देते शांती धार ।**
पुष्पांजलि करते विशद, हम ये मंगलकार ।।

शांतये शांतिधारा ...... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

महावीर स्वामी जिन एवं क्षेपपाल अर्चा-24

हम रागद्वेष में अटक रहे, ईर्ष्या भी हमें जलाती है।
जग में सदियों से भटक रहे, पर शांति नहीं मिल पाती है।।
हम अर्घ्य बनाकर लाए हैं, मन का संताप विनाश करो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।

ॐ ह्रीं श्री महवीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विष्णुपद छन्द)

'कुमुददेव' जिनवर के द्वारे, भक्ती से आए ।
कुमुद चढ़ा जिन अर्चा करके, मन में हर्षाए ।।
वीर प्रभु का क्षेत्रपाल है, महिमा का धारी ।
दुख सन्ताप मिटाने वाला, है मंगलकारी ।।1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कुमुददेव क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'अन्जनदेव' निरंजन बनने, जिन पद में आवे ।
भक्ति भाव से नृत्यगान कर, श्री जिन गुण गावे।।
वीर प्रभु का क्षेत्रपाल है, महिमा का धारी ।
दुख सन्ताप मिटाने वाला, है मंगलकारी ।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री अन्जनदेव क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

चँवर ढुरावे भक्ति भाव से, 'चामर' शुभ दाई ।
श्री जिनेन्द्र की जो दिखलावे, अतिशय प्रभुताई।।
वीर प्रभु का क्षेत्रपाल है, महिमा का धारी ।
दुख सन्ताप मिटाने वाला, है मंगलकारी ।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री चामर क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'पुष्पदंत' सुर पुष्प वृष्टिकर, मन में हर्षावे ।
तीन योग से नत होकर के, जिनके गुण गावे ।।
वीर प्रभू का क्षेत्रपाल है, महिमा का धारी ।
दुख सन्ताप मिटाने वाला, है मंगलकारी ।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पुष्पदंत क्षेत्रपाल इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

महावीर के यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल हैं चार ।
जिन शासन के रक्षा कारी, गाए मंगलकार ।।
गुड़ तिल तेल और वस्त्रादिक, से करते सम्मान।
विशद अर्चना करो भाव से, करते अर्घ्य प्रदान।।5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री महावीर जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- **सारे जग में शांति हो, देते शांती धार ।**
पुष्पांजलि करते विशद, हम ये मंगलकार ।।

शांतये शांतिधारा ...... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप मंत्र : ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षेत्रपालेभ्यो नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा- **भक्त रहे तीर्थेश के, यक्ष यक्षी क्षेत्रपाल ।**
भाव सहित गाते यहाँ, जिनकी हम जयमाल ।।

(तोटक छन्द)

ऋषभादिक चौबिस तीर्थंकर, हुए लोक में महति महान ।
सुर नर मुनियों द्वारा बोला,जाता है जिनका जयगान ।।

केवलज्ञान जगाते प्रभु तव, समवशरण रचते हैं देव।
सेवा में तत्पर रहते हैं, चउ निकाय के देव सदैव ।।1।।
श्री जिन के आसन के दक्षिण, में हैं यक्ष का शुभ स्थान।
और यक्षिणी वाम दिशा में, बैठ करे प्रभु का गुणगान ।।
प्रति तीर्थंकर काल में चारों, दिश में क्षेत्रपाल हों चार ।
जिन शासन के रक्षक होते, सम्यक् दृष्टी मंगलकार।।2।।
मति श्रुत अवधिज्ञान के धारी, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पावें आठ ।
अतिशय वैभव धारी गाए, होते जिनके ऊँचे ठाठ ।।
जो कुदेव के रक्षक होते, उनके हो मिथ्या श्रद्धान ।
किन्तू जिन शासन के रक्षक, सम्यक दृष्टी कहे महान ।।3।।
देव शास्त्र गुरुओं की रक्षा, में तत्पर जो रहें त्रिकाल ।
हो कोई उपसर्ग उपद्रव, उसे दूर करते तत्काल ।।
मतिभ्रम हो जब जब सतियों पर, दुष्टी आँख उठाते हैं ।
क्षेत्रपाल तब-तब आकर के, उनको सबक सिखाते हैं ।।4।।
कमठ ने पार्श्व मुनी के ऊपर, पत्थर जब बरसाए थे ।
वह उपसर्ग टालने अहिपति, पद्मावति तव आए थे ।।
श्रुत सागर मुनिवर के ऊपर, मंत्री खड्ग उठाए थे ।
क्षेत्रपाल रक्षा करने को, तब भी वहाॅं पे आए थे ।।5।।
हैं प्राचीन जिनालय जितने, या हैं तीर्थ क्षेत्र शुभकार ।
क्षेत्रपाल की हैं प्रतिमाएँ, सब स्थानों पर मनहार ।।
दुष्ट उपद्रव करने वालों, पर देवों ने किया प्रहार ।
चोर आदि से रक्षा की है, क्षेत्रपाल ने कई प्रकार ।।6।।
शाकिन डाकिन भूत पिशाची, की बाधाएँ विनशाते ।
निर्धन को धन बल निर्बल को, बाझों को सुत दिलवाते ।।
तीर्थंकर जिन की पूजा अरु, देव देवियों का सम्मान ।
पूर्ण कामना हो श्रद्धा से, भाव सहित जो करें विधान ।।7।।

दोहा- **अनुचर जो तीर्थेश के, गाए मंगलकार ।**
उनकी अर्चा से विशद, जीवन हो शुभकार ।।

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रौं ह्रः चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी षण्णवति क्षेत्रपालेभ्यश्च यक्ष-यक्षिभ्यो शाकिनीभूतप्रेत-पिशाचादिकृत घोरोपद्रव विनाशकाय महाक्षामडामर-दुरितारिमारी घोरोपद्रव विध्वंसकाय जयमालां पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- यक्ष यक्षिणी और सब, आओ यहाँ क्षेत्रपाल ।
शांतीधारा कर रहे, करो शांति तत्काल ।।

शान्तये शांतिधारा.... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

दोहा- क्षेत्रपाल खुश हो कृपा, सब पर करो प्रदान।
पुष्पांजलिं करते यहाँ, आकर करो निदान ।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

माँ पद्मावती पूजन

स्थापना

पार्श्वनाथ मुनि ध्यान किए थे, तब कमठासुर आया।
ओले सोले पत्थर पानी, क्रोधित हो बरसाया।।
सिर के ऊपर पार्श्व मुनी को, रक्षा कर बैठाया
रक्षा को धरणेन्द्र ने सिर पे, फण का छत्र लगाया।।
धरणेन्द्र पद्मावति की महिमा, तब से फैली भाई।
विघ्न विनाशक शांति प्रदायक, माँ पद्मा कहलाई।।

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं श्री पार्श्वनाथ भक्त धरणेन्द्रभार्या पद्मावती महा देव्यै अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वीर छन्द)

प्रासुक नीर समर्पित करने, कलश में भर के लाए हैं।
सुख शांती सौभाग्य जगाने, मात शरण में आए हैं।।

बाधाएँ भक्तों की सारी, दूर हटाओ हे माता।
रोग शोक सब पाप नशाकर, दो अब जीवन में साता।।1।।

ॐ आँ क्रों ह्रीं प्रशस्तवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन चिह्न युत सपरिवारे हे पद्मावती देव्यै जलं गृहाण-2 जलं समर्पयामि स्वाहा।

मिथ्या मति में भटके भव भव, कितने कष्ट उठाए हैं।
मन का अब संताप नशाने, मात शरण में आए हैं।।
बाधाएँ भक्तों की सारी, दूर हटाओ हे माता।
रोग शोक सब पाप नशाकर, दो अब जीवन में साता।।2।।

ॐ आँ क्रों ह्रीं प्रशस्तवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन चिह्न युत सपरिवारे हे पद्मावती देव्यै चंदनं गृहाण-2 चंदनं समर्पयामि स्वाहा।

पुण्य पाप का उदय प्राप्त कर, हमने सुख दुख पाए हैं।
निराबाधा सुख पाने को हम, मात शरण में आए हैं।।
बाधाएँ भक्तों की सारी, दूर हटाओ हे माता।
रोग शोक सब पाप नशाकर, दो अब जीवन में साता।।3।।

ॐ आँ क्रों ह्रीं प्रशस्तवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन चिह्न युत सपरिवारे हे पद्मावती देव्यै अक्षतं गृहाण-2 अक्षतान् समर्पयामि स्वाहा।

काम रोग के वश में होकर, चारों गति भटकाए हैं।
अब संतोष हृदय में जागे, मात शरण में आए हैं।।
बाधाएँ भक्तों की सारी, दूर हटाओ हे माता।
रोग शोक सब पाप नशाकर, दो अब जीवन में साता।।4।।

ॐ आँ क्रों ह्रीं प्रशस्तवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन चिह्न युत सपरिवारे हे पद्मावती देव्यै पुष्पं गृहाण-2 पुष्पं समर्पयामि स्वाहा।

क्षुधा रोग से सतत सताए, शांति नहीं हम पाये हैं।
तृप्ति जगे मेरे मन में अब, मात शरण में आए हैं।।
बाधाएँ भक्तों की सारी, दूर हटाओ हे माता।
रोग शोक सब पाप नशाकर, दो अब जीवन में साता।।5।।

ॐ आँ क्रों ह्रीं प्रशस्तवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन चिह्न युत सपरिवारे

हे पद्मावती देव्यै नैवेद्यं गृहाण-2 नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा।

मोह तिमिर से भटके जग में, सम्यक् ज्ञान ना पाएँ हैं।
भेद ज्ञान प्रगटाने को अब, मात शरण में आए हैं।।
बाधाएँ भक्तों की सारी, दूर हटाओ हे माता।
रोग शोक सब पाप नशाकर, दो अब जीवन में साता।।6।।

ॐ आँ क्रों ह्रीं प्रशस्तवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन चिह्न युत सपरिवारे हे पद्मावती देव्यै दीपं गृहाण-2 दीपं समर्पयामि स्वाहा।

अष्ट कर्म ने हमें सताया, पाकर दुख घबड़ाए हैं।
निज में शांति जगाने को हम, मात शरण में आए हैं।।
बाधाएँ भक्तों की सारी, दूर हटाओ हे माता।
रोग शोक सब पाप नशाकर, दो अब जीवन में साता।।7।।

ॐ आँ क्रों ह्रीं प्रशस्तवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन चिह्न युत सपरिवारे हे पद्मावती देव्यै धूपं गृहाण-2 धूपं समर्पयामि स्वाहा।

कर्मों का फल पाकर के हम, आकुलता को पाए हैं।
शिव पथ की अब राह दिखाओ, मात शरण में आए हैं।।
बाधाएँ भक्तों की सारी, दूर हटाओ हे माता।
रोग शोक सब पाप नशाकर, दो अब जीवन में साता।।8।।

ॐ आँ क्रों ह्रीं प्रशस्तवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन चिह्न युत सपरिवारे हे पद्मावती देव्यै फलं गृहाण-2 फलं समर्पयामि स्वाहा।

निज स्वभाव से भ्रमित हुए हम, निज गुण जान ना पाए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ भैंटने, मात शरण में आए हैं।।
बाधाएँ भक्तों की सारी, दूर हटाओ हे माता।
रोग शोक सब पाप नशाकर, दो अब जीवन में साता।।9।।

ॐ आँ क्रों ह्रीं प्रशस्तवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन चिह्न युत सपरिवारे हे पद्मावती देव्यै अर्घ्यं गृहाण-2 अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

दोहा- **शांती धारा के लिए, लाए निर्मल नीर।**
मात शरण में लो हमें, पहुँचाओ भव तीर।।

शान्तये शांतिधारा।

दोहा – **पुष्पाञ्जलि को फूल यह, लाए खुशबूदार।**
विशद शांती पाएँ यहाँ, करो मात उपकार।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ आं क्रों ह्रीं ऐं क्लीं ह्रूँ श्री पदमावती देव्यै नमः मम् सर्वविघ्नोपशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

सर्व देवियों में रही, रक्षक सर्व प्रधान।
नाम एक सौ आठ हैं, गाते हैं जयगान।।

(राधेश्याम छन्द)

निज शासन की रक्षक देवी, पद्मावती है माँ का नाम।
हंसासनी लोक में प्रचलित, चार भुजा धारी अभिराम।।
है पाताल निवासी देवी, है धरणेन्द्र आपके नाथ।
जिन शासन की रक्षा करने, में तत्पर रहते द्वय साथ।।
जीवों को जब कष्ट सताए, हो जाते प्राणी असहाय।
रोग शोक से पीड़ित कोई, प्रेत की बाधा जिन्हें सताय।।
कोई व्यंतर बाधाएँ पा, कोई ईति भीति दुख पाय।
कोई निर्धन होके दुखिया, कोई देश विदेशों जाय।।
माँ की सेवा करते आके, उनको माता बने सहाय।
आश्रय पाने वाला कोई, खाली हाथ कभी न जाय।।
देव शास्त्र गुरु की श्रद्धानी, माता पद्मावती कही महान।
जिन शासन की रक्षाकारी, सारे जग में रही प्रधान।।
पार्श्व मुनी पर कमठासुर ने, जब उपसर्ग किया था घोर।
ओले शोले पानी पत्थर, बरसाए थे चारों ओर।।
फण फैला कर माता तुमने, बैठाया था निज के शीश।
जन जन की रक्षक तुमको माँ, कहते जग के सर्व ऋशीष।।
बनकर भक्त आपके माता, आये हैं हम तुमरे द्वार।
जीवन में सुख शांतीकारी, माता बनी आप आधार।।

पावन अर्घ्य समर्पित करते, विशद यहाँ पर हम हे मात!
जीवन जब तक रहे हमारा, आप निभाना मेरा साथ।।

दोहा- **रोग शोक भय दीनता, कभी ना आए पास।**
सुख शांती सौभाग्य का, नित प्रति होय विकास।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री पद्मावती देव्यै नमः धरणेन्द्रसहिताय सर्वविघ्न विनाशनाय पूर्णार्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

दोहा- **सुरभित लाए पुष्प यह, भरकर पावन थाल।**
इस भव के सब दुख मिटें, कटे कर्म का जाल।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

आचार्य विशदसागर जी पूजन

(स्थापना)

वीर प्रभु के अनुयायी तुम, विशद सिंधु आचार्य प्रवर।
विराग सिंधु से दीक्षा पाए, हम सबके तुम हो गुरुवर।।
इन गुरु शिष्य की गरिमा से यह, हर्षाया सारा अम्बर।
परम पूज्य गुरुवर का अनुपम, जयकारा गूंजा घर-घर।।
हे गुरुवर! मम हृदय विराजो, अभिलाषा यह है मेरी।
पुष्पों की अंजलि भरकर के, करें स्थापना हम तेरी।।

ॐ हूँ प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

गंगा में डुबकी लगा-लगा, अपने को पावन बतलाया।
अब कर्म कलंक मिटाने को, गुरु चरणों में जल ले लाया।।

आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।1।।

ॐ ह्रूँ प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरमुनीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

गुरुवर की पूजा से सचमुच, हृदय कली मम् खिल जाती।
चन्दन से पूजा भवाताप को, दूर हटा सुख दिलवाती।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।2।।

ॐ ह्रूँ प.पू.108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं नि. स्वाहा।

अक्षयपद की प्राप्ति हेतु शुभ, जहाँ से गुरु के कदम बढ़े।
उस जनम क्षेत्र के कण-कण को, मेरे यह अक्षत पुंज चढ़े।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।3।।

ॐ ह्रूँ प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् नि.स्वाहा।

बागों से चुन-चुनकर सुरभित, पुष्पों के थाल सजाए हैं।
निज काम बाण विध्वंस हेतु, गुरुचरण शरण में आए हैं।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।4।।

ॐ ह्रूँ प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं नि.स्वाहा।

मोदक फेनी घेवर आदिक, यह शुभ पकवान बना लाए।
अब निज की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चढ़ाने को आये।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।5।।

ॐ ह्रूँ प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

हम रत्न जड़ित घृत के दीपक, यह चरण शरण में लाये हैं।
मिट जाये अब अज्ञान तिमिर, गुरु चरणों में हम आये हैं।।

आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।6।।

ॐ ह्रूँ प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि स्वाहा।

शुभ धूपदान में धूप जलाएँ, दश दिश धूप उड़े भारी।
बहु जनम-जनम के संचित भी, कर्मों की पूर्ण जले क्यारी।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।7।।

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि. स्वाहा।

शुभ मोक्ष सुफल की चाह में गुरु ने, नग्न दिगम्बर व्रत पाया।
प्रभुवर के बनकर लघुनन्दन, शुभ मोक्ष मार्ग को अपनाया।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।8।।

ॐ ह्रूँ प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं नि. स्वाहा।

यह अष्टद्रव्य की सामग्री, मेरी पूजा का साधन है।
गुरु भक्ती हम कर सकते बस, दुर्गति का सहज निवारण है।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु, की नितप्रति पूजा करते हैं।
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।9।।

ॐ ह्रूँ प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

दोहा - **विशद गुरु की भक्ति है, मम जीवन आधार।**
युगों-युगों तक हम नहीं, भूलेंगे उपकार।।

चौपाई

जयवंतों गुरुदेव हमारे, हैं अनंत उपकार तुम्हारे।
जिन शासन के आप सितारे, जग में रहते जग से न्यारे।।1।।

ग्राम कुपी जग में अलबेला, नाथूराम घर लगा था मेला।
माँ इंदर के प्यारे नंदा, अपने घर के तुम हो चंदा।।2।।
नाम रमेश आपका गाया, भवि जीवों के मन को भाया।
आप गये गुरुवर के द्वारे, छोड़ के जग के सभी सहारे।।3।।
बचपन से ही तुमने पाया, महामंत्र नवकार को ध्याया।
तप्त स्वर्ण सम तन है न्यारा, दर्शन से मिटता संसारा।।4।।
श्रद्धा से फिर शीश झुकाया, विराग सिन्धु को गुरू बनाया।
सन् छियानवे में दीक्षा पाई, आप बने फिर शिव के राही।।5।।
धन्य द्रोणगिरि कीन्हें गलियाँ, खिलीं त्याग संयम की कलियाँ।
दृढ़ता से संयम को पाले, जिन आगम के हो रखवाले।।6।।
मालपुरा में टोंक जिला है, गुरुवर का सौभाग्य जगा है।
बसंत पंचमी का दिन पाये, भरत सिन्धुजी गुरुवर आये।।7।।
परमेष्ठी आचार्य कहाए, विशदसिन्धु आचार्य कहा।
तीन गुप्ति द्वादश तप धारे, क्षमा आदि दश धर्म संवारे।।8।।
पंचाचार आपने धारे, षट् आवश्यक पालन हारे।
छत्तिस मूल गुणों के धारी, सारा जग पद में बलिहारी।।9।।
पद से अति निस्पृह रहते हैं, जो करते हैं वह कहते हैं।
गुरुकृपा के पंख जो पाते, साधक ध्यान गगन में जाते।।10।।
गुरुवर ही तकदीर संवारे, हारे को बन जायें सहारे।
कई विधान तुमने रच डाले, भक्त जनों के किये हवाले।।11।।
गुरु के सम्मुख सूरज फीका, लगता है चंदा भी नीचा।
दुर्लभ वस्तु सुलभ हो जाती, गुरु कृपा जब रंग दिखाती।।12।।
हम धरते हैं ध्यान तुम्हारा, जानो सब मन्तव्य हमारा।
सर्व समन्दर स्याही घोलूँ, गुरु गुण को मैं कैसे बोलूँ।।13।।
स्वर्ग सुखों की चाह नहीं है, निज दुख की परवाह नहीं है।
गुरु की भक्ति जो भी करते, कोष पुण्य से वो हैं भरते।।14।।

दोहा – **सपना हो साकार यह, पूरी मन की आश।**
मुक्ती के राही बनें, शिवपुर में हो वास।।

ॐ हूँ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

अहोभाग्य है मेरा गुरुवर, दर्श करें दो नयनों से।
विशद गुरु का गुण गाएँ हम, तन से मन से वचनों से।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्

– संघस्थ ब्र. सपना दीद

समुच्चय महाअर्घ्य

पूज रहे अरहंत देव को, और पूजते सिद्ध महान्।
आचार्योपाध्याय पूज्य लोक में, पूज्य रहे साधू गुणवान।।
कृत्रिमाकृत्रि जिन चैत्यालय, चैत्य पूजते मंगलकार।
सहस्रनाम कल्याणक आगम, दश विध धर्म रहा शुभकार।।
सोलहकारण भव्य भावना, अतिशय तीर्थक्षेत्र निर्वाण।
बीस विदेह के तीर्थंकर जिन, विशद पूज्य चौबिस भगवान।।
ऊर्जयन्त चम्पा पावापुर, श्री सम्मेद शिखर कैलाश।
पंचममेरु नन्दीश्वर पूजें, रत्नत्रय में करने वास।।
मोक्षशास्त्र को पूज रहे हम, बीस विदेहों के जिनराज।
महाअर्घ्यं यह नाथ! आपके, चरण चढ़ाने लाए आज।।

दोहा– जल गंधक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
सर्व पूज्य पद पूजते, चरण झुकाकर माथ।।

ॐ ह्रीं श्री भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकालवंदना करे करावे भावना भावे श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग–करणानुयोग–चरणानुयोग–द्रव्यानुयोगेभ्मो नमः। दर्शन–विशुद्धयादि–षोडशकारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन– सम्यगज्ञान–सम्मक्चारित्रेभ्यो नमः। जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगर–नगरी विषै, ऊर्ध्व लोक मध्य लोक पाताल लोक विषै

विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्मो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनबिम्बेभ्मो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाश, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, राजगृही, मथुरा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, हस्तिनापुर, चंदेरी, पपौरा, अयोध्या, शत्रुञ्जय, तारङ्गा, चमत्कारजी, महावीरजी, पदमपुरी, तिजारा, विराटनगर, खजुराहो, श्रेयांशगिरि, मक्सी पार्श्वनाथ, चंवलेश्वर, नारनौल आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशंतितीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे ...... देश......प्रान्ते ....नाम्नि नगरे ...... मासानामुत्तमे ...... मासे शुभ पक्षे...... तिथौ...... वासरे ...... मुनि आर्यिकानां श्रावक- श्राविकानां सकल कर्मक्षयार्थं अनर्घ पद प्राप्तये संपूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत् शिष्य श्री भरतसागराचार्य श्री विरागसागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे राजस्थान प्रान्ते जयपुर नाम नगरे निर्वाण सम्वत् 2542 वि.सं. 2072 कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे त्रयोदशि सोमवासरे श्री क्षेत्रपाल विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

आचार्योपाध्याय-सर्व साधु का अर्घ्य

रत्नत्रय के धारी पावन, शिवपद के राही अनगार।
विषयाशा के त्यागी साधू, तीन लोक में मंगलकार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करते हम जिनका अर्चन।
विशद भाव से चरण कमल में, भाव सहित करते वन्दन।।

ॐ ह्रीं निर्ग्रंथाचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीस तीर्थंकर आरती

(तर्ज – मांई रि मांई ...)

चौबीस जिन की आरती करने, दीप जलाकर लाए।
विशद आरती करने के शुभ, हमने भाग्य जगाए।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्–2।।टेक।।
ऋषभ नाथ जी धर्म प्रवर्तक, अजित कर्म के जेता।
सम्भव जिन अभिनन्दन स्वामी, अतिशय कर्म विजेता।।
सुमति नाथ जिनवर के चरणों, मति सुमति हो जाए।
विशद आरती ...
पद्म प्रभु जी पद्म हरे हैं, जिन सुपार्श्व जी भाई।
चन्द्र प्रभु अरु पुष्पदन्त की, धवल कांति सुखदाई।।
शीतल जिन के चरण शरण में, शीतलता मिल जाए।
विशद आरती ...
श्रेय नाथ जिन श्रेय प्रदायक, वासुपूज्य जिन स्वामी।
विमलानन्त प्रभु कहलाए, जग में अन्तर्यामी।।
धर्मनाथ जी धर्म प्रदाता, इस जग में कहलाए।
विशद आरती ...
शांति कन्थु अरु अरह नाथ जी, तीन–तीन पद पाए।
चक्री काम कुमार तीर्थंकर, बनकर मोक्ष सिधाए।।
मल्लिनाथ जी मोह मल्ल को, क्षण में मार भगाए।
विशद आरती ...
मुनिसुव्रत जी व्रत को धारे, नमि धर्म के धारी।
नेमिनाथ जी करुणा धारे, पार्श्वनाथ अविकारी।।
वर्धमान सन्मति वीर अति, महावीर कहलाए।
विशद आरती ...

श्री पार्श्वनाथ भगवान आरती

तर्ज - आज करे हम ....

आज करें हम पार्श्व प्रभु की, आरती मंगलकारी-2।
मणिमय दीपक लेकर आये-2, जिनवर तुमरे द्वार।।
हो जिनवर- हम सब उतारे तेरी आरती, हो प्रभुवर हम सब ..।।टेक।।
अच्युत स्वर्ग से चयकर स्वामी, माँ के गर्भ में आए-2।
अश्वसेन वामा देवी माँ-2, को प्रभु धन्य बनाए।।
हो जिनवर-हम सब ....।।1।।
गर्भोत्सव पर काशी नगरी, आके देव सजाए-2।
छह नौ माह रत्न वृष्टीकर -2, जय-जयकार लगाए।।
हो जिनवर-हम सब ....।।2।।
जन्मोत्सव पर मेरु गिरि पर, आके न्हवन कराए-2।
सब इन्द्रों ने मिलकर भाई-2, जय-जयकार लगाए।।
हो जिनवर - हम सब ......।।3।।
यह संसार असार जानकर, उत्तम संयम पाए-2।
ज्ञानोत्सव पर समवशरण शुभ-2, आके धनद बनाए।।
हो जिनवर- हम सब ......।।4।।
शाश्वत तीर्थ की स्वर्ण भद्र शुभ, कूट से मुक्ती पाए-2।
'विशद' आपकी भक्ती करने-2, चरण शरण हम आए।।
हो जिनवर - हम सब ....।।5।।
आज करें हम पार्श्व प्रभु की, आरती मंगलकारी-2।
मणिमय दीपक लेकर आये-2, जिनवर तुमरे द्वार।।
हो जिनवर- हम सब ...... ।।टेक।।

क्षेत्रपाल जी की आरती

(तर्ज : हो जनवर हम सब उतारे तेरी आरती..)

आज करें हम क्षेत्रपाल की, आरति मंगलकारी-2।
घृत के दीप जलाकर लाए-2, बाबा तेरे द्वार।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...।।टेक।।
छियानवे क्षेत्रपाल की फैली, इस जग में प्रभुताई-2।
विजय वीर अपराजित भैरव-2, मणिभद्रादिक भाई।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...।।1।।
लाल लंगोट गले में कंठी, लाल दुपट्टा धारी-2।
सिर पर मुकुट शोभता पावन-2, कर त्रिशूल मनहारी।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...।।2।।
कानों कुण्डल पैर पावटा, माथे तिलक लगाए-2।
बाजू बंद पान है मुख में-2, कूकर वाहन पाए।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...।।3।।
अंगद आदि उपद्रव कीन्हें, तब लंकेश्वर ध्याए-2।
सर्व उपद्रव दूर किया तब-2, अतिशय शांती पाए।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...।।4।।
सम्यक्त्वी तुम भक्त जनों के, सारे संकट हरते-2।
पुत्रादिक धन सम्पत्ती की-2, वांछा पूरी करते।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...।।5।।
आज करें हम क्षेपाल की, आरति मंगलकारी-2।
घृत के दीप जलाकर लाए-2, बाबा तेरे द्वार।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...।।6।।

पद्मावती माता की आरती

(तर्ज–भक्ति बेकरार है...)

माता का दरबार है, अतिशय मंगलकार है।
आज यहाँ पद्मावति माँ की, हो रही जय–जयकार है।।टेक।।

माँ पद्मावति पार्श्वनाथ को, मस्तक ऊपर धारे जी–2।
इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र खड़े हैं, माँ पद्मा के द्वारे जी–2।। माता...।।1।।
माता का दरबार है ...

जो भी माँ की शरण में आए, वह सौभाग्य जगाए जी–2।
पुत्र–पौत्र धन सम्पत्ति माँ के, दर पे आके पाए जी–2।।2।।
माता का दरबार है ...

शाकिन–डाकिन भूत भवानी, की बाधा हट जाए जी–2।
बात–पित्त कफ रोगादिक से, प्राणी मुक्ती पाए जी–2।।3।।
माता का दरबार है ...

त्रय नेत्री हे पद्मा देवी, तिलक भाल पे सोहे जी–2।
मुख की कान्ती अनुपम माँ की, भविजन का मन मोहे जी–2।।4।।
माता का दरबार है ...

दैत्य कमठ का मान गलाया, सुयश विश्व में छाया जी–2।
आदि दिगम्बर धर्म बताकर, जिनमत को फैलाया जी–2।। 5।।
माता का दरबार है ...

कुक्कुट सर्प वाहिनी माँ के, सहस्र नाम बतलाए जी–2।
मथुरा में जिन दत्तराय जी, रक्षा तुमसे पाए जी–2।।6।।
माता का दरबार है ...

दीप धूप फल पुष्प हार ले, आरति करने आए जी–2।
दर्शन करके विशद आपके, मनवांछित फल पाए जी–2।।7।।
माता का दरबार है ...

आचार्य विशद सागर जी महाराज की आरती

(तर्ज : माई री मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा....।)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के ......

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की....2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के.....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के.....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के.....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के.....

आचार्य विशद सागर जी चालीसा

दोहा – आचार्य प्रवर को नमन है, करें पाप का नाश।
गुरूदेव की अर्चना करती आत्म प्रकाश।।
निःस्वार्थ हो जो करे भक्ती अपरम्पार।
चालीसा को सब पढ़ें नितप्रति बारम्बार।।

चौपाई

जय जय जय गुरुदेव हमारे, जैन धर्म के आप सितारे।
सरस्वती का तुम पर माया, सर्व जगत् में नाम कमाया।।
जय गुरुदेव जी नमस्कार है, रत्नत्रय का चमत्कार है।
नाथूराम जी के राज दुलारे, इन्द्रर माँ के नयन के तारे।।
कुपी ग्राम में जन्म है पाया, आँगन में रत्न एक है आया।
मात-पिता का मन हर्षाया, नाम रमेश आपने पाया।।
युवा अवस्था तुमने धारी, मन ही मन में सोच निराली।
विराग सिन्धु जी को किया समर्पण, देखा आपने निज का दर्पण।।
जीवन की अनुपम है बगिया, मुरझाए न अन्तर की कलियॉं।
मुनिवर के व्रत तुमने पाये, नग्न दिगम्बर रूप में आये।।
कर्मों को तुम मार रहे हो, अपने भाव सँभार रहे हो।
स्वर्गों में भी चर्चा होती, देवों द्वारा अर्चा होती।।
जन जन के हो प्यारे गुरुवर, रहते जग से न्यारे गुरुवर।
निज में निज का चिंतन करके, जिनवाणी का मंथन करके।।
समता रस को धारण करते, दुःखों से तुम कभी न डरते।
स्वर्गों की तुम्हें चाह नहीं है, भव सुख की परवाह नहीं है।।
वैद्यों के तुम वैद्यराज हो, रोगों का करते इलाज हो।
बच्चे बूढ़े सब आते हैं, नाम तुम्हारा सब ध्याते हैं।।
वाणी के नित झरने झरते, दुःखों को तुम सबके हरते।

अमीर गरीब का भेद न करके, दया भाव तुम सब पर धरते।।
महावीर के तुम अनुयायी, जैनधर्म की शिक्षा पाई।
निज गुण में अवगाहन करते, काय क्लेष का पालन करते।।
आशीष की महिमा है न्यारी, खाली झोली भरती सारी।।
कीर्ति तुम्हारी जग में न्यारी, गुण गाती है जग में सारी।
क्रोध मान तुम कभी न करते, स्व पर्याय में सदा विचरते।।
आतम चिंतन में चित धरते, मूल गुणों का पालन करते।
स्याद्वादमयी जिनकी वाणी, जग में तुम सम कोई न ज्ञानी।।
ऋषियों के तुम ऋषीराज हो, जैनधर्म के आप ताज हो।
रागद्वेष तुम कभी न करते, परिषहों को हँस कर सहते।।
काया में अनुराग न करते, वैराग्य के शुभ भाव उमड़ते।
कई विधान के रहे रचयिता, मोक्ष मार्ग के अनुपम नेता।।
संसारी सब वस्तु निराली, कल्पवृक्ष की तुम हो डाली।
स्वर्ण जयंती अवसर आया, सब के मन उल्लास है छाया।
गुरु महिमा को कह न पाए, सपना भी गुरु के गुण गाये।
अन्त समय में गुरु पद पावें, शिवपुर में ही धाम बनावें।।

मैं बालक अल्पज्ञ हूँ नहीं है मुझ में ज्ञान।
गुरु चालीसा नित पढूँ करू गुरु का ध्यान।।
चालीसा चालीस तुम सुबह पढ़ों या शाम।
कार्य पूर्ण हो जायेगा, रखो हृदय श्रद्धान।।

– ब्र. सपना दीदी

कोई ब्रह्मा कोई विष्णु, कोई श्री राम को ध्याते।
कोई अफसर कोई श्रेष्ठी, कोई नेता के गुण गाते।।
तुम्हारा कर्म ही तुमको जमाने में सजा देगा।
अरे! इंसान क्या भगवान भी तो कर्मफल पाते।।